अमृत विचार

लोक दर्पण

रविवार, 21 अप्रैल 2024 www.amritvichar.com

हमारे इर्द-गिर्द प्राय : बढ़ती आयु में शारीरिक कमजोरी अथवा अति गंभीर जानलेवा रोगों के चलते कष्टमय एवं असहनीय पीड़ा से जूझते लोगों के उदाहरण देखने को मिलते हैं। कई लोग वर्षों से कोमा में पड़े रहते हैं और उन पर चिकित्सा का कोई असर भी नहीं होता। संभ्रांत लोग अपने रोगी की देखभाल के लिए नर्सिंग सेवा की पूर्ण व्यवस्था करने में सक्षम होते हैं,परंतु कई मामलों में बेडसोर (बिस्तर पर निरंतर पड़े रहने से पीठ में पीड़ा दायक घाव) जैसी स्थितियां मरीज और देखभाल करने वाले व्यक्ति दोनों के लिए किसी गंभीर यातना से कम नहीं होता। कितना भी पैसा हो, कितनी भी सुविधाएं हों, एक ऐसी अवस्था में सब बेमानी हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों की वेदना रोगी की वेदना से कहीं ज्यादा होती है। कभी-कभी उन असीम कष्टों से छुटकारा पाने की चाहत प्रभावित व्यक्ति और परिवारजन दोनों की होती है,परंतु हमारे देश का कानून किसी को भी यूथेनेशिया (इच्छामृत्यु) की अनुमति नहीं देता।

आखिर क्यों जरूरी हो जाती है इच्छामृत्यु

मोटे तौर पर यूथेनेशिया (इच्छामृत्यु) मेडिकल की सहायता में संपन्न आत्मघात यानी सुसाइड होता है जिसमें एक चिकित्सक जानबूझकर रोगी की मृत्यु को प्रेरित करता है। दुनिया के कई देशों में उन व्यक्तियों के लिए इच्छामृत्यु प्रक्रिया अपनाने को कानूनी मान्यता प्राप्त है,जो एक बड़ी लंबी अवधि से कोमा की स्थिति में हो या किसी लाइलाज रोग की असहनीय निरंतर पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए आखिरी सांस का इंतजार कर रहा हो। पीड़ारहित तरीके से और बिना किसी देरी के अपना जीवन समाप्त करने की चाहत अथवा इच्छामृत्यु चुनने को यूथेनेशिया का अधिकार कहा जाता है। इस प्रक्रिया के पीछे दीर्घकालिक, कष्टमय और खर्चीली बीमारी से छुटकारा मिलने का तर्क माना जाता है। कभी-कभी यूथेनेशिया को "मर्सी किलिंग" यानी लाइलाज बीमारी और असहनीय एवं कष्टकारी दर्द से पीड़ित रोगी की हत्या की संज्ञा दी जाती है।

वैसे विश्व के लगभग सभी देशों में इच्छामृत्यु को गैर-कानूनी अर्थात् अवैध माना जाता रहा है,परंतु हालिया दौर में कई देशों में इसे कानूनी मान्यता दिए जाने की शुरुआत हो गई है। दो माह पूर्व (5 फरवरी) उत्तर-पश्चिमी यूरोप के एक देश नीदरलैंड्स के 93 वर्षीय पूर्व प्रधानमंत्री और उनकी पत्नी ने यूथेनेशिया के आधार पर अपनी जीवनलीला समाप्त की। उन दोनों की पीड़ारहित मृत्यु की प्रक्रिया उनके चिकित्सक की सहायता में संपन्न हुई। नीदरलैंड्स वर्ष 2002 में यूथेनेशिया की अनुमति देने वाला दुनिया का पहला देश था। डच सरकार के अनुसार यूथेनेशिया की प्रक्रिया रोगी की इच्छा और उसके अनुरोध पर उसके चिकित्सक द्वारा घातक खुराक में एक उपयुक्त औषधि को देकर की जाती है। इस प्रक्रिया में एक चिकित्सक जानलेवा दवाई उपलब्ध कराता है, परंतु इसका सेवन रोगी द्वारा स्वयं किया जाता है। हालांकि डच सरकार द्वारा यूथेनेशिया प्रक्रिया के तहत प्राण त्यागने की अनुमति केवल उन्हीं रोगियों को दी जाती है,जो एक बड़ी लंबी अवधि से निरंतर किसी असाध्य रोग की असहनीय पीड़ा और कष्ट से ग्रस्त हों।

डॉ.कृष्ण नंद पांडेय
वरिष्ठ विज्ञान लेखक

भारत में भारतीय न्याय संहिता की धारा 309 के अंतर्गत आत्महत्या का प्रयास करना एक दंडनीय अपराध है और इच्छामृत्यु को आत्महत्या का ही प्रयास माना जाता है। हालांकि लोगों का मानना है कि यदि कोई व्यक्ति आत्महत्या के विफल प्रयास में बच जाए तो उस पर दंडात्मक कार्यवाही करने के बजाय उसे काउंसलिंग यानी परामर्शक सेवा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

द गार्डियन (15 जुलाई 2019) में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार यूथेनेशिया और किसी की सहायता में प्राण त्यागने की प्रक्रिया में अंतर है। यूथेनेशिया प्रक्रिया का निर्णय लंबी अवधि तक कष्टमय जीवन बिताने वाले व्यक्ति द्वारा नहीं,बल्कि किसी अन्य के द्वारा,उदाहरण के तौर पर उसके चिकित्सा के द्वारा लिया जाता है। असहनीय वेदना से प्रभावित व्यक्ति द्वारा स्वयं किया गया यूथेनेशिया का अनुरोध को "वॉलंटरी यूथेनेशिया" अर्थात स्वैच्छिक इच्छामृत्यु की श्रेणी में माना जाता है। किसी की सहायता में संपन्न आत्महत्या (असिस्टेड सुसाइड) के अंतिम निर्णय की जिम्मेदारी स्वयं प्रभावित व्यक्ति की होती है। मोटे तौर पर वॉलंटरी यूथेनेशिया और किसी अन्य की सहायता में संपन्न सुसाइड दोनों ही प्रक्रियाएं किसी की सहायता में जीवन समाप्त करने के संदर्भ में होती हैं। हालांकि कुछ वर्गों द्वारा इसे केवल मौत की कगार पर खड़े व्यक्ति को आत्महत्या करने में सहायता करने के संदर्भ में माना जाता है।

नीदरलैंड और फ्रांस जैसे कुछ देशों में ऐसे लोगों को पैलिएटिव सेडेशन की अनुमति का प्रावधान है,जो मृत्यु होने तक शांतिपूर्वक तरीके से स्वयं को गहन बेहोश रखने के लिए अनुरोध कर सकते हैं,परंतु इसे यूथेनेशिया नहीं माना जाता। नीदरलैंड में यूथेनेशिया और आत्मघात में सहायता करने जैसी दोनों प्रक्रियाएं असहनीय कष्ट झेलने वाले मरणासन्न ऐसे रोगियों के लिए लीगल है जिनके स्वस्थ होने की संभावना बिल्कुल नहीं होती। बारह वर्ष से अधिक आयु का कोई व्यक्ति इसके लिए अनुरोध कर सकता है,परंतु 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए अभिभावकों की मंजूरी अनिवार्य है। बेल्जियम, लक्जमबर्ग, कनाडा और कोलंबिया जैसे देशों में भी यूथेनेशिया और सहायता में संपन्न आत्महत्या दोनों की अनुमति है। हालांकि कोलंबिया में केवल मरणासन्न रोगी ही अनुरोध कर सकते हैं। बेल्जियम में बच्चों के लिए कोई आयु संबंधी प्रतिबंध नहीं है,परंतु यह जरूरी है कि वे जानलेवा बीमारी से ग्रस्त हों। स्विट्जरलैंड तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के कई राज्यों यथा-कैलिफोर्निया, कोलोरेडो, हवाई, न्यू जर्सी, ओरेगॉन, वॉशिंगटन स्टेट और डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया में यूथेनेशिया की तुलना में मेडिकल सहायता में जीवन समाप्त करने के अनुरोध की स्थिति ज्यादा सामान्य है। ऑस्ट्रेलिया के विक्टोरिया राज्य में भी सहायता में संपन्न आत्महत्या को कानूनी मान्यता प्राप्त है। ओरेगॉन और वरमोंट राज्यों में मेडिकल सहायता में जीवन समाप्त करने की अनुमति केवल जानलेवा बीमारियों के कारण मरणासन्न रोगियों लोगों को ही प्रदान की जाती है। कुछ देशों में यूथेनेशिया की मंजूरी देने का कानून तो बना है,परंतु इसे रोकने का कोई कानून नहीं है। स्विट्जरलैंड में संपत्ति लोभ अथवा स्वार्थी इरादों से किसी व्यक्ति को आत्महत्या करने में किसी भी तरह की सहायता करना अपराध माना जाता है।

यूथेनेशिया के प्रकार

यूथेनेशिया अर्थात् इच्छामृत्यु की प्रक्रिया दो प्रकार से की जाती है।

पैसिव यूथेनेशिया (निष्क्रिय प्रक्रिया)

जब कोई रोगी केवल चिकित्सीय युक्तियों यानी मेडिकल डिवाइसेज पर जीवित हो और उसकी चिकित्सीय सुविधाएं यानी लाइफ सपोर्ट सिस्टम को बंद कर दिया जाए,ऐसे में स्वत : मृत्यु की प्रक्रिया पैसिव यूथेनेशिया कहलाती है।

एक्टिव यूथेनेशिया (सक्रिय प्रक्रिया)

इस स्थिति में मौत के इच्छुक व्यक्ति को चिकित्सक द्वारा प्राणघातक खुराक में किसी दवाई का सेवन कराकर अथवा उसके सेवन की सलाह देकर उस व्यक्ति की इच्छामृत्यु सुनिश्चित की जाती है। सभी वैधानिक यूथेनेशिया स्वैच्छिक इच्छामृत्यु यानी वॉलंटरी यूथेनेशिया होती है यानी इस प्रक्रिया में रोगी की पूर्णतया अनुमति होती है और ज्यादातर मामलों में उसके द्वारा अनुरोध किया गया होता है। यदि रोगी अपनी सहमति देने में असमर्थ हो जैसे की शिशु अथवा पूरी तरह असमर्थ व्यक्ति, तो यह प्रक्रिया नॉन वॉलंटरी यूथेनेशिया के रूप में जानी जाती है।

यूथेनेशिया एक विवादास्पद विषय

यूथेनेशिया एक अत्यंत विवादास्पद विषय है। कुछ लोगों की आध्यात्मिक मान्यता है कि सभी जीवन ईश्वर की देन है और जीवन समाप्त करने का अधिकार केवल ईश्वर को ही है। इसके सामाजिक पहलू के अनुसार यदि इसे कानूनी मान्यता प्रदान की जाती है तो रोगियों की इच्छा के विरुद्ध चिकित्सक द्वारा यूथेनेशिया प्रक्रिया अपनाई जा सकती है। यदि कोई रोगी/व्यक्ति अपना जीवन समाप्त करने के लिए सहमत नहीं हो तो उसे हत्या के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

पैलिएटिव केयर एक संवैधानिक अधिकार

पैलिएटिव केयर यानी उपशामक देखभाल का तात्पर्य मरणासन्न व्यक्ति की आखिरी सांस तक की देखभाल से होता है। कुछ की मृत्यु कुछ घंटों या कुछ दिनों के भीतर संभावित होती है तो किसी को कई महीनों तक पैलिएटिव केयर की जरूरत होती है। वैसे मृत्यु की भविष्यवाणी करना संभव नहीं होता,परंतु कई मामलों में मरणासन्न व्यक्तियों की अगले 12 महीनों के भीतर मृत्यु होने की संभावना होती है।

मौत जीवन का एक अपरिहार्य हिस्सा है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के अंतिम दिनों तक सम्मान के साथ जीने का अधिकार है। इंडियन जर्नल ऑफ पैलिएटिव केयर के सितंबर-दिसंबर,2012 अंक के अनुसार पैलिएटिव केयर एक संगठित प्रणाली के अंतर्गत घातक बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों के निदान से लेकर उसकी मृत्यु तक देखभाल करना होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार पैलिएटिव केयर के अंतर्गत घातक बीमारी और उससे जुड़ी असहनीय,कष्टमय समस्याओं से पीड़ित रोगियों और उनके परिवार के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना,असहनीय दर्द का शीघ्र निदान एवं प्रभावी इलाज करना और त्रुटिहीन मूल्यांकन करना शामिल है। पैलिएटिव केयर में रोगियों की स्वास्थ्य समस्याओं के अतिरिक्त मनोसामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं को भी ध्यान में रखा जाता है।

भारत में स्थिति

भारत में एक्टिव यूथेनेशिया अर्थात् चिकित्सक द्वारा चिकित्सीय उपायों को अपनाकर किसी व्यक्ति अथवा रोगी का जीवन समाप्त करना पूरी तरह अवैध/गैर कानूनी/न्याय विरुद्ध/असंवैधानिक है,परंतु निष्क्रिय और मरणासन्न रूप से बीमार मुंबई की नर्स अरुणा शानबाग की ससम्मान मृत्यु सुनिश्चित करने के लिए वर्ष 2018 में पैसिव यूथेनेशिया को मंजूरी दी गई थी। वह वर्ष 1973 में एक हिंसा के परिणामस्वरूप 42 वर्षों तक अपना निष्क्रिय जीवन बिता रही थी। पैसिव यूथेनेशिया के अंतर्गत मरणासन्न रूप से बीमार यानी टर्मिनली इल किसी रोगी को जीवित रखने के लिए प्रयुक्त लाइफ सपोर्ट सिस्टम को हटा दिया जाता है। लाइफ सपोर्ट सिस्टम से रोगी की मौत टाली जा सकती है,परंतु रोगी और उनके परिवार के जनों के लिए यह अत्यंत पीड़ादायक साबित होती है। मरणासन्न रूप से बीमार रोगी द्वारा असहनीय कष्टों से छुटकारा पाने के लिए अपना इलाज बंद करने अथवा लाइफ सपोर्ट सिस्टम को हटाने की इच्छा व्यक्त कर सकता है,परंतु इस प्रक्रिया को अपनाने का निर्णय रोगी स्वयं अथवा उसके परिवार के सदस्यों द्वारा कदापि नहीं लिया जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय से पैसिव यूथेनेशिया की अनुमति प्राप्त करने से संबंधित मामलों में मेडिकल बोर्ड द्वारा मरणासन्न रूप से बीमार रोगी की विस्तृत जांच के बाद रोगी के रिश्तेदार के आवेदन को हाईकोर्ट की पूर्व मंजूरी प्राप्त होनी चाहिए।

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार मरणासन्न रूप से बीमार रोगियों को उनकी मृत्यु तक पैलिएटिव केयर की सुविधा प्राप्त करना उनका मौलिक अधिकार है। द टाइम्स ऑफ इंडिया (8 मार्च 2024) में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में लगभग 14 प्रतिशत आबादी को पैलिएटिव केयर सुविधा उपलब्ध है,जबकि भारत में पैलिएटिव केयर के इच्छुक केवल 1-2 प्रतिशत लोगों को ही यह सुविधा सुलभ है।

भारतीय संविधान के आर्टिकल 21 के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को ससम्मान मृत्यु प्राप्त करने का मौलिक अधिकार है। यही कारण है कि असहनीय वेदना से पीड़ित रोगी का केवल इलाज ही नहीं, मरणासन्न व्यक्ति की शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक जैसी आवश्यकताएं पूरी करने वाली पैलिएटिव केयर सुविधा की उपलब्धता उसका मौलिक अधिकार भी है।

यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता देने वाले देश

वर्ल्ड पॉपुलेशन रिव्यू की ताजा रिपोर्ट के अनुसार नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कोलंबिया, बेल्जियम, लक्जमबर्ग, स्पेन, कनाडा में कुछ विशेष परिस्थितियों में सक्रिय यानी एक्टिव यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता प्राप्त है। पुर्तगाल, रूस, दक्षिण कोरिया जैसे अन्य देशों में भी कुछ विशेष परिस्थितियों के आधार पर यूथेनेशिया प्रक्रिया को कानूनी मान्यता प्राप्त है। हालांकि अलग-अलग देशों में यूथेनेशिया से संबंधित पहलुओं में कानूनी भिन्नता है।

नीदरलैंड : अप्रैल 2001 में यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता देने वाला नीदरलैंड विश्व का पहला देश था,जहां अप्रैल 2002 से यह कानून प्रभावी किया गया। वहां एक्टिव और पैसिव दोनों प्रकार के यूथेनेशिया को वैधानिक मान्यता है। नीदरलैंड में यदि कोई रोगी लाइलाज बीमारी के चलते असहनीय पीड़ा से त्रस्त हो और वह अच्छी तरह से जानता हो कि उसका ठीक होना असंभव है,भले ही वह मृत्यु की कगार पर न हो,उस स्थिति में वह एक्टिव यूथेनेशिया के लिए अनुरोध कर सकता है। यूथेनेशिया की प्रक्रिया से जुड़े चिकित्सक को पहले कम से कम एक अन्य चिकित्सक से परामर्श लेनी आवश्यक है जिससे यह सुनिश्चित हो जाए कि उस रोगी के लिए यूथेनेशिया प्रक्रिया के सभी मापदंड अनुकूल हैं। उस देश में 12 वर्ष की आयु के बच्चे भी यूथेनेशिया के लिए अनुरोध कर सकते हैं बशर्ते 12 से 16 वर्षीय बच्चों के माता-पिता की पूर्व मंजूरी अनिवार्य है।

न्यूजीलैंड : न्यूजीलैंड की "एंड ऑफ लाइफ च्वाइस अधिनियम 2019" के अंतर्गत विशिष्ट परिस्थितियों में मेडिकल सहायता में मृत्यु की प्रक्रिया अपनाने को कानूनी मान्यता प्राप्त है। रोगी की आयु 18 वर्ष या अधिक और न्यूजीलैंड का नागरिक अथवा स्थाई निवासी होना अनिवार्य है। इसके साथ ही असहनीय कष्ट के साथ उसका स्वास्थ्य निरंतर बिगड़ता जा रहा हो तथा उसे स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए कि छह महीने के भीतर उसकी मृत्यु संभावित है और वह अपनी इच्छा व्यक्त करने के लिए पूर्णतया सक्षम है। यदि कोई रोगी यूथेनेशिया के लिए अनुरोध करता है और दो चिकित्सकों द्वारा यह सुनिश्चित कर लिया जाए की वह यूथेनेशिया के सभी मापदंडों के अनुरूप है तो उसका चिकित्सक उसे प्राणघातक खुराक में दवाई देकर यूथेनेशिया प्रक्रिया को संपन्न कर सकता है।

पुर्तगाल : असेंबली ऑफ रिपब्लिक पुर्तगाल ने वर्ष 2020 की शुरुआत में कुछ तरह के यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता प्रदान करने का बिल पारित किया था। हालांकि स्पष्टता के अभाव में उस देश के संवैधानिक न्यायालय ने उसे असंवैधानिक घोषित कर दिया। साथ ही पुर्तगाल में यूथेनेशिया से जुड़े सभी वैधानिक पहलुओं को ध्यान में रखकर उसे कानूनी मान्यता प्रदान करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

रूस : यद्यपि रूस में यूथेनेशिया प्रतिबंधित है। फिर भी इस प्रक्रिया के विरुद्ध किसी प्रकार के दंड का कानून भी नहीं है।

दक्षिण कोरिया : दक्षिण कोरिया में फरवरी 2018 से यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता प्राप्त है। हालांकि इसकी अनुमति केवल ऐसे मरणासन्न रोगी को दी जाती है जिसकी स्थिति निरंतर बिगड़ती जा रही हो और उसके ठीक होने की संभावना बिल्कुल नहीं हो।

स्पेन : स्पेन में 25 जून, 2021 को सक्रिय यूथेनेशिया का कानून प्रभाव में आया। रोगी के चिकित्सक द्वारा प्राणघातक खुराक में दवाई दी जा सकती है अथवा रोगी को जानलेवा खुराक में दवाई का स्वयं सेवन करने के लिए कहा जा सकता है। यूथेनेशिया का अनुरोध करने वाले व्यक्ति का स्पेन का नागरिक अथवा लीगल निवासी होना अनिवार्य है। उसे अच्छी जानकारी हो कि वह गंभीर और लाइलाज बीमारी से पीड़ित है। मृत्य के इच्छुक ऐसे व्यक्ति के लिए 15 दिनों के अंतराल में दो बार यूथेनेशिया प्रक्रिया के लिए अनुरोध करना जरूरी है और इस प्रक्रिया से संबंधित सभी जानकारी होने के साथ उसकी सहमति जरूरी है।

स्वीडन : स्वीडन में वर्ष 2010 से पैसिव यूथेनेशिया प्रक्रिया को कानूनी मान्यता प्राप्त है। वहां एक्टिव यूथेनिसिया की प्रक्रिया अभी तक प्रतिबंधित है।

ऑस्ट्रेलिया : वर्ष 2019 और 2022 के बीच ऑस्ट्रेलिया के सभी छह राज्यों में यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता प्रदान की गई,परंतु कुछ प्रांतों में वर्ष 2023 तक यह कानून प्रभावी नहीं था। यूथेनेशिया की प्रक्रिया केवल वहां के नागरिक रोगियों पर अपनाई जा सकती है,जो गंभीर अवस्था से पीड़ित हो और जिनकी छह माह के भीतर मृत्यु संभावित हो (तंत्रिका संबंधी विकारों से ग्रस्त रोगियों के लिए यह अवधि 12 महीने की है)। यूथेनेशिया प्रक्रिया के लिए कम से कम दो चिकित्सकों से संपर्क करना जरूरी है। हालांकि ऑस्ट्रेलियाई टेरिटरी में यूथेनेशिया को अभी तक कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है।

बेल्जियम : नीदरलैंड के बाद बेल्जियम यूरोपीय संघ का दूसरा देश है,जहां वयस्कों के लिए वर्ष 2002 में तथा बच्चों के लिए वर्ष 2013 में यूथेनेशिया प्रक्रिया को कानूनी मान्यता दी गई। इस देश में भी असाध्य रोग की असहनीय पीड़ा से त्रस्त वे रोगी यूथेनेशिया के लिए अनुरोध कर सकते हैं जिनके रोग मुक्त होने की संभावना बिल्कुल नहीं हो। हालांकि इस देश में वह वयस्क व्यक्ति भी यूथेनेशिया के लिए अनुरोध कर सकता है,जो रोग के कारण मृत्यु की कगार पर न हो,परंतु ऐसी स्थिति में एक महीने की अवधि तक प्रतीक्षा करना अनिवार्य है। बच्चों के मामलों में यूथेनेशिया का अधिकार केवल असाध्य रोग की असहनीय पीड़ा से पीड़ित मौत की कगार पर खड़े बच्चों को दिया जा सकता है,परंतु उन्हें इस प्रक्रिया के बारे में भली-भांति जानकारी सुलभ होना अनिवार्य है। बेल्जियम में मानसिक रोगियों को भी यूथेनेशिया का अधिकार प्राप्त है,परंतु उन्हें इस प्रक्रिया के बारे में स्पष्ट जानकारी होना अनिवार्य है।

कनाडा : कनाडा में असाध्य रोगग्रस्त मरणासन्न रोगियों को यूथेनेशिया की मंजूरी दी जा सकती है। हालांकि कनाडा सुप्रीम कोर्ट के अनुसार गंभीर रोग और असहनीय पीड़ा से त्रस्त रोगी भी यूथेनेशिया के लिए अनुरोध कर सकते हैं,भले ही उनकी मृत्यु की संभावना निकट न हो।

कोलंबिया: कोलंबिया में शुरुआत में कैंसर और एड्स के कारण मरणासन्न व्यक्तियों तथा किडनी अथवा यकृत के फेल होने (निष्क्रिय होने) से ग्रस्त रोगियों को ही यूथेनेशिया की अनुमति दी जाती थी,परंतु जुलाई, 2021 से अन्य रोगियों को भी ये अधिकार दिए जाने लगे,चाहे वे मृत्यु की कगार पर हों अथवा नहीं।

फिनलैंड : फिनलैंड में पैसिव यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता है,जबकि एक्टिव यूथेनेशिया की प्रक्रिया अभी तक कानूनी रूप से अवैध है।

चिली : चिली में एक्टिव यूथेनेशिया और किसी चिकित्सक या व्यक्ति की सहायता में आत्मघाती कदम उठाना अभी भी प्रतिबंधित है,परंतु वर्ष 2012 से पैसिव यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता प्राप्त है। मरणासन्न रोगी को मेडिकल ट्रीटमेंट यानी चिकित्सीय इलाज कराने से इंकार करने का अधिकार प्राप्त है।

डेनमार्क : डेनमार्क एक ऐसा देश है,जहां यूथेनेशिया को न तो कानूनी मान्यता प्राप्त है और न ही उसे अपराध माना जाता है। द लैंसेट में वर्ष 2003 के अध्ययन की प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार डेनमार्क में लगभग एक प्रतिशत मौतें एक्टिव यूथेनेशिया के तहत होती हैं।

जर्मनी : जर्मनी में वर्ष 2014 में पैसिव यूथेनेशिया को कानूनी मान्यता प्रदान की गई। यद्यपि एक्टिव यूथेनेशिया अभी भी प्रतिबंधित है।

भारत : भारत में एक्टिव यूथेनेशिया पूर्णतया असंवैधानिक है। हालांकि वर्ष 2018 में एक ब्रेन डेड यानी स्थाई रूप से अचेतन अवस्था के एक जीवित व्यक्ति के मामले में पैसिव यूथेनेशिया प्रक्रिया अपनाने की विधिक मंजूरी दी गई थी।

कविता फिर लौटेगी मंचों पर गीतों के रूप में

हिंदी साहित्य में जब-जब गीत-नवगीत की संवेदना और युगीन संदर्भों के साथ-साथ भाषागत सहजता व आंचलिक मिठास की चर्चा होती है। हिन्दी नवगीत के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के सृजनात्मक उल्लेख के बिना न तो वह पूर्ण होती है और न ही उस चर्चा का कोई महत्व रहता है। हिन्दी नवगीत के वह महत्वपूर्ण और अद्वितीय हस्ताक्षर 22 जुलाई 1939 को बस्ती (उ.प्र.) में जन्मे माहेश्वर तिवारी हैं,जो गत 16 अप्रैल 2024 को इस नश्वर संसार से विदा हो गए। उनकी प्रकाशित कृतियों-'हरसिंगार कोई तो हो', 'सागर मुद्राओं पर तर्जनी', 'नदी का अकेलापन', 'सच की कोई शर्त नहीं' और 'फूल आए हैं कनेरों में' के अतिरिक्त नवगीत की दर्जनाधिक पांडुलिपियां,एक गजल संग्रह और एक आलेख संग्रह प्रकाशन हेतु प्रतीक्षारत है। उप्र सरकार से यश भारती और उप्र हिन्दी संस्थान से साहित्य भूषण सहित शताधिक सम्मानों से समादृत कीर्तिशेष तिवारी जी के निधन से हिन्दी साहित्य विशेष रूप से हिन्दी गीत-नवगीत के लिए 16 अप्रैल 2024 का दिन अभिशप्त दिन ही रहा। माहेश्वर तिवारी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रस्तुत है **मुरादाबाद के नवगीतकार योगेन्द्र वर्मा 'व्योम'** द्वारा उनसे लिया गया साक्षात्कार,जो आज भी अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है-

व्योम : नवगीत आपकी दृष्टि में क्या है और इसकी क्या-क्या शर्तें व मर्यादाएं हैं?

मा.ति. : नवगीत भारतीयता से जुड़ा और आधुनिकता तथा वैज्ञानिक बोध से जुड़ा वह काव्य-रूप है,जो छायावादोत्तर गीत-धारा से, गेयत्व को छोड़कर शेष सभी रूपों में आधुनिक मनुष्य का गीत है। इसमें प्रेम के नाम पर न तो मध्यकालीन परकीया भाव है और न कुहासे से भरी कल्पनाशीलता। इसमें सजग सामाजिक बोध और घर-आंगन का विश्वसनीय चेहरा है। आधुनिकता से उपजीं विकृतियों के प्रति भी चौकन्नी जागरूकता, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों के प्रति एक प्रतिपक्ष का भाव तो इसमें है ही,सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें भारतीय संस्कृति और देशी जमीन के प्रति गहरे सरोकार भी हैं। यह समकालीन अन्य तमाम रूपों की तरह आयातित काव्य-रूप नहीं है। यह निजत्व से जुड़ा होकर भी उस आत्माभिव्यक्ति से मुक्त है,जो कभी-कभी कविता के धरातल से खिसककर डायरी के रूप में सामने आ जाता है।

व्योम : आप नवगीत का आरंभ कहां से मानते हैं? महाप्राण निराला से या उससे भी पहले?

मा.ति. : नवगीत की पहली आहट निराला के गीतों में ही मिलती है। गीत की नई भाषा और शिल्प की नई बुनावट सबसे पहले महाप्राण निराला में ही मिलती है। यह ध्यान देने की बात है कि गीत ही नहीं,प्रयोगवादी और कालांतर में नई कविता के नाम से अभिहित समकालीन कविता के प्रथम प्रयोक्ता भी निराला ही हैं। कुछ लोग नवगीत का आरंभ छठे दशक से मानने के आग्रही हैं,लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि गंगा को उत्तरकाशी या उससे आगे मानने की अपेक्षा गंगोत्री से ही माना जाना चाहिए, क्योंकि गंगोत्री से निकलने के पश्चात गंगा भागीरथी, अलकनंदा आदि नामों से जगह-जगह जानी जाती है,लेकिन उत्स तो गंगोत्री ही है,उसी तरह निराला को नवगीत का प्रथम पुरुष माना जाना चाहिए। डॉ. शंभूनाथ सिंह, वीरेन्द्र मिश्र जैसे नवगीत कवि निराला को ही नवगीत का पुरोधा मानने के आग्रही रहे हैं। नवगीत शब्द का पहली बार प्रयोग राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने स्वयं द्वारा संपादित गीत संकलन 'गीतांगिनी' की भूमिका में लिखित रूप से किया,लेकिन वह भी इसके प्रथम पुरुष नहीं स्वीकारे जा सकते हैं। इस सारे विमर्श के बाद निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि नवगीत का आरंभ निराला से ही हुआ।

व्योम : कहा जाता है कि नवगीत यथार्थ के कठोर धरातल पर खड़ा है तथा उसमें व्यवस्था विरोध के साथ-साथ वैश्वीकरण और बाजारवाद के विरुद्ध स्वर भी मुखर हुए हैं,लेकिन भविष्य के गर्भ में झांकने की कोशिशें नवगीत में उतनी नहीं हुई, क्यों ?

मा.ति. : कोई भी रचना अपनी समकालीनता से जुड़ी होती है। वह अपने समय के यथार्थ को ही अभिव्यक्ति देती है। वह निष्कर्ष नहीं देती,वर्तमान की विसंगतियों, त्रासदियों को अपनी अंतर्वस्तु में शामिलकर पाठकों को भविष्य के संकेत देती है। सौंदर्यशास्त्र के नए मानक गढ़ती है। सामाजिक बदलावों की जरूरतों की ओर प्रच्छन्न संकेत करती है। इससे आगे सोचना उसके पाठकों और उसके समाज का दायित्व बनता है। यह सभी बड़े रचनाकार और उनका सृजन करता है। गीत महाकाव्य नहीं है कि उससे भविष्य के संकेत ढूंढे जाएं। वैश्वीकरण और बढ़ते बाजारवाद के खतरों की ओर वह इंगित करता है। इससे बचाव और विकल्पों की तलाश उसका काम नहीं है। जब भारतेन्दु हरिश्चंद्र 'आओ सब मिलकर रोबहु भाई/हा-हा भारत दुर्दशा न देखी जाई' या निराला की 'राम की शक्तिपूजा' में जो अंतर्वस्तु है। वह सिर्फ अपने समय को ही अपनी अभिव्यक्ति में समेटती है, भविष्य की ओर संकेत दूसरी तरह की कविताओं में ढूंढा जा सकता है,गीत में नहीं।

व्योम : आपका सबसे प्रथम नवगीत कौन सा था तथा कब और कहां प्रकाशित हुआ?

मा.ति. : मैंने जिस समय गीत लेखन आरंभ किया उस समय 'नवगीत' शब्द चर्चा में नहीं था। तार-सप्तक के कवियों ने तथा उससे बाहर के प्रयोगवादी व नई कविता के कवियों ने जो गीत लिखे,उन्हें कुछ समय तक नई कविता के गीत और नया गीत के नाम से जाना-पहचाना जाता रहा। सन् 1960 के बाद नए गीत कवियों की रचनाओं के लिए 'नवगीत' शब्द केन्द्र में आया। मेरे जिस गीत को लेकर मुझे नवगीतकारों में शामिल किया गया, वह है - 'आओ हम धूप-वृक्ष काटें/इधर-उधर हल्कापन बांटें'। यह गीत पहली बार वाराणसी से प्रकाशित 'मराल' पत्रिका में सन् 1964 में छपा और चर्चित हुआ।

व्योम : गीत से नवगीत तक की यात्रा में हिन्दी कविता ने कौन-कौन सी उपलब्धियां हासिल कीं?

मा.ति. : कई पड़ाव आए गीत से नवगीत तक की यात्रा में,गीत कभी प्रगीत बना, स्वच्छंदावादी गीत बना और फिर वह सन् साठ के बाद नवगीत बना। गीतों में प्रकृति-मनुष्य से अलग एक इकाई थी,किंतु नवगीत में वह सहचरी बन गई। भवानी प्रसाद मिश्र के गीत 'सतपुड़ा के घने जंगल/ऊंघते अनमने मंगल' और 'आज पानी गिर रहा है/घर नयन में तिर रहा है' जिस नए गीत की आहट देते हैं। वह गीत से नवगीत के प्रस्थानक बिन्दु के रूप में स्वीकारा जा सकता है। इस अंतर को तत्कालीन 'नीरज' और वीरेन्द्र मिश्र के गीतों के माध्यम से भी जांचा परखा जा सकता है। गीत वैदिक ऋचाओं के रूप में उपजा और वह लोक जीवन तथा लोक मानस से होकर नवगीत तक आया। कुछ लोगों का मत है कि नवगीत नई कविता की अनुकृति से उपजा,यह मिथ्या भ्रम है।

व्योम : नवगीत को पूर्व में नया गीत आदि-आदि नामों से पुकारा गया, पचास वर्षों से भी अधिक यात्रा करने के बाबजूद नाम का संकट आज भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है,आपको क्या लगता है ?

मा.ति. : यह संकट नवगीत का नहीं है। नवगीत की परिधि से छूटे या खिसकाए गए कुछ लोग उसे नए-नए नाम देकर जुलूस में शामिल होना चाहते हैं। मैंने भी सहज गीत की चर्चा की है,लेकिन वह गीत की संप्रेषणीयता से जुड़ा है। नई कविता के गीत, नए गीत आदि नाम उस समय गीत में आए बदलाव की ओर संकेत करते हैं। वे संज्ञाएं नहीं हैं, विशेषण हैं उस समय की रचनाओं को रेखांकित करने वाले। अब नामकरण का एक सिलसिला बन गया है और किसी के विरुद्ध अध्यादेश तो लाया नहीं जा सकता। यह तो रचना और विचार का लोकतंत्र है। हां,यह ध्यान देने की बात है कि लोकतंत्र की भी एक मर्यादा होती है, वह भीड़तंत्र नहीं है और न ही अराजकता या तानाशाही। नवगीत के बाद गीत के अग्रिम चरण का एक ही सार्थक नाम है जन-पक्षधरता या जनबोध की ओर उन्मुख जनवादी गीत। ध्यान देने की बात है कि नवगीत का यह प्रस्थानक वैचारिकता और रचना की समाजोन्मुखता से लैस है। यह किसी की निजी उद्घोषणा नहीं, बरन जन-पक्षधरता की चिंतनशीलता और रचनाकर्म के अभिप्रेय से जुड़ा है।

व्योम : अपने जीवन का कोई रोचक संस्मरण सुनाइए?

मा.ति. : जीवन तमाम प्रसंगों से भरा है। इस समय एक प्रसंग याद आ रहा है-सुल्तानपुर (उ.प्र.) के राजकीय इंटर कॉलेज में कवि सम्मेलन था। संयोजक कथाकार स्व. गंगाप्रसाद मिश्र थे। उनसे मेरा पारिवारिक रिश्ता था। कवि सम्मेलन में देर से पहुंचने के कारण जिन कपड़ों में था,उन्हीं में सीधा मंच पर पहुंच गया। मंच पर पहुंचते ही काव्यपाठ करना पड़ा। कविता पढ़कर मंच से उठकर चाय पीने के लिए आया। मैंनें कवि सम्मेलन में अपना याद वाला गीत पढ़ा-'याद तुम्हारी जैसे कोई कंचन कलश भरे/जैसे कोई किरन अकेली पर्वत पार करे'। चाय पी रहा था तो एक वयोवृद्ध सज्जन पास आए और ऐसा सवाल कर बैठे कि उनकी आयु और प्रश्न सुनकर मैं चौंक गया। उन सज्जन ने बड़ी गंभीरता से कहा - 'तिवारीजी, मेरी एक जिज्ञासा है' मैंने सहमति में अपना सिर हिलाया तो पूछ बैठे -'यह घटना कहां की है और यह किरन कौन है? क्या वह आपके साथ नहीं थी।' मैंने जैसे तैसे उन्हें टाला, और जब कवि मित्रों से उसकी चर्चा की तो सभी ठहाका मारकर हंस पड़े।

कविता

नेता वही पुराने जी

टोपी बदली गमछा बदला,
नेता वही पुराने जी।
चमचों-चेलों के जयकारे,
गाते वही तराने जी।
हाथ में झंडा गले में माला,
चेहरे पर मुस्कान सजाई।
होठों पर हैं राग सुरीले,
वोट हमीं को देना भाई।
लोकलुभावन वादों वाले,
नेता बड़े सयाने जी।
टोपी बदली गमछा बदला,
नेता वही पुराने जी।
जैसा गेटअप वैसे जुमले,
बनते सबके सखा सुभीते।
जन-पीड़ा को गाने वाले,
एक अदद कुर्सी के भूखे।
बातों-बातों में बहलाते,
करते नये बहाने जी।
टोपी बदली गमछा बदला,
नेता वही पुराने जी।

नरेन्द्र सिंह नीहार
नई दिल्ली

गजल

रौशनी का यही निशाना है,
तीरगी को मजा चखाना है।
आस टूटे न क्यों युवाओं की,
शहर में मिल न कारखाना है।

भा गई है नगर की रंगीनी,
अब कहां उनको गांव जाना है।
कौन उंगली उठाए ऐबों पर,
शहर का वो बड़ा घराना है।

वो सियासत में आ गए जब से,
माल-ओ-जर का कहां ठिकाना है।
मन में सब नाउमीद लोगों के,
आस का इक दिया जलाना है।

और उम्मीद क्या करें उनसे,
हम पे इल्जाम ही लगाना है।

ओंकार सिंह विवेक
रामपुर

मां ऐसी क्यों होती है

मैं दौड़ पीछे सपनों के पीछे वो
मेरे पीछे दौड़ती है,
कोई बता दे मुझको आखिर मां
ऐसी क्यों होती है

गलती पर सबसे पहले डांटे, पर
साथ में भी वो रोती है
कोई बता दे मुझको आखिर मां
ऐसी क्यों होती है

चाहे घूमो दुनिया सारी न कहीं
ठिकाना मिलता है
मां के आंचल में ही मुझको पूरा
जमाना मिलता है
हम देखें आंखों से दुनिया वो
हममें दुनिया रखती है
कोई बता दे मुझको आखिर मां
ऐसी क्यों होती है

सूरज से भी पहले उठती, घड़ी
की सुई सी चलती रहती,
मेहनत वो सारा दिन करती घर
में सबके नखरे सहती
न लेती वो कोई तनख्वाह न छुट्टी
वो लेती है
कोई बता दे मुझको आखिर मां
ऐसी क्यों होती है

वैसे तो है बड़ी समझदार सभी
गुणों में पक्की है
पता नहीं पर गणित विषय में वो
क्यों इतनी कच्ची है
मांगू जब भी मैं एक रोटी थाली में
दो रख देती है
कोई बता दे मुझको आखिर मां
ऐसी क्यों होती है

ज्ञान विज्ञान ग्रंथों की बातें दुनिया
में सबसे ऊंची है
नीम हकीम वैद्य चिकित्सक
माना उच्चकोटि है
एक काजल के टीके के दम पर
वो दुनिया से लोहा लेती है
कोई बता दे मुझको आखिर मां
ऐसी क्यों होती है

तुझको लिखने की कोशिश मां
मैं कितनी बार करूं
ऊंचा है भगवान से दर्जा अब मैं
क्या बखान करूं
पूरी दुनिया को चलाने वाले भी
मांगे तुझसे माखन रोटी है
कोई बता दे मुझको आखिर मां
ऐसी क्यों होती है।

श्रुति शुक्ला
कानपुर

कहानी पॉकेट मनी

पॉकेट मनी का हमने नाम तो बहुत सुना था,पर सात-आठ साल की उम्र पार करने पर भी हमने उसे छूकर कभी नहीं देखा था। हां, ताऊजी लोगों के घर कभी हमारा जाना होता था तो वहां दीदियां और भैया लोग अपने पॉकेटमनी से हम दोनों बहनों को छोटी-मोटी पार्टी जरूर दिया करते थे। ऋचा दीदी तो कभी प्रज्ञा दीदी अपने छोटे-छोटे पर्सों में से नोट निकालतीं और फूंक मारते ही आइसक्रीम कोन्स हमारे हाथ में होते। कभी तनु भैया हमारे पोइट्री रिसाइटल से खुश होकर हमको रुपये का एक पत्ता देकर हमसे कहते, 'मां बदौलत तुम्हारे कार्यक्रम से बहुत खुश हुए। ये लो अपना इनाम और जाकर ऐश करो।' हम अच्छे बच्चे बनकर भैयाओं और दीदियों की सेवा में लगे रहते थे। सुना था कि भैया और दीदी लोग अपनी पसन्द के कपड़े भी अपनी पॉकेटमनी से ही खरीदते थे। पॉकेटमनी की ताकत हमको पता चल चुकी थी,पर हमारे मम्मी-पापा को यह खबर ही नहीं थी कि उनकी बच्चियां बड़ी हो चुकी हैं और उनके हाथ अब उनकी जेब या पर्स तक पहुंचने लायक हो चुके हैं। यूं तो मम्मी-पापा हमारे लिए खूब सामान लाते थे। बाजार में भी अक्सर हमारी फरमाइशों को पूरा किया जाता था,पर उन्हें पूरी किए जाते समय हर बार हमको उपदेश की भारी डोज भी हजम करनी पड़ती थी।

मम्मी कहती थीं, 'मिठाई खाने की वजह से फलां-फलां लड़की के दांतों में कैविटी हो गई। आइसक्रीम खाने से फलां-फलां लड़के के टान्सिल्स बढ़ गए।' ऐसी बातें तो हम बर्दाश्त कर भी लेते पर गोल-गप्पे जैसी भोली और मासूम चीज को जब भला-बुरा कहा जाता तो हम आपे से बाहर हो जाते थे। मम्मी-पापा के साथ बाजार में घूमते समय हम दोनों बहनों की नजर दुकानों के शो-केसेज पर रहती थी। विंडो शॉपिंग में हम माहिर थे। क्या मजाल कि किसी भी दुकान का कोई भी माल हमारी पारखी नजरों से छूट जाए।

मम्मी हम दोनों बहनों के फरमाइशी आइटम्स की लंबी लिस्ट सुनते ही उनकी बुराइयां बताना शुरू कर देती थीं। पॉकेटमनी के सपने देखते-देखते मैं पापा की शर्ट की पॉकेट तक और रागिनी उनकी पैंट की पॉकेट तक पहुंच गईं,पर वो हमारे हाथ नहीं आया। जन्मदिन हम बच्चों के लिए हजार खुशियां लेकर आता है। इस दिन हमको वीआईपी ट्रीटमेंट मिलता है,मम्मी-पापा हमारे लिए अलादीन का मिनी चिराग हो जाते हैं और हमारी बड़ी नहीं तो कम से कम छोटी-मोटी ख्वाहिशें जरूर पूरी करते हैं।

मेरे दसवें जन्मदिन पर मम्मी मेरे और अपने दोस्तों

को बुलाकर पार्टी देना चाहती थीं,पर मैंने इसके बदले में बच्चों के लिए पॉकेट मनी ग्रांट किए जाने की डिमांड कर डाली। रागिनी ने भी मेरे सुर से अपना सुर मिला लिया। चार महीने बाद उसका भी तो आठवां जन्मदिन आना था। आश्चर्य कि मम्मी ने उस दिन बड़े धैर्य के साथ हम बहनों की डिमांड सुनी। पापा भी उस दिन बहुत अच्छे मूड में थे। हुर्रे! उन्होंने हमारी बरसों से चली आ रही पॉकेट मनी दिए जाने की डिमांड को स्वीकार कर लिया। पापा चाहते थे कि महीने में पचास-पचास रुपये देकर हम दोनों बहनों को निहाल कर दिया जाए। पॉकेट मनी में दस-दस रुपयों के एनुअल इंक्रीमेंट का सुझाव भी रखा गया,पर इस बार मम्मी थोड़ी उदार हुईं और उन्होंने सत्तर-सत्तर रुपये के पॉकेटमनी का ऑफर दे डाला। इधर हमारी डिमांड दो-दो सौ रुपयों से नीचे नहीं आ रही थी,लेकिन आखिरकार हम दोनों बहनें सौ-सौ रुपये महीने के पॉकेट मनी पर राज़ी हो गईं। मम्मी ने दो शानदार पर्स हमको पॉकेटमनी रखने के लिए भेंट किए। जब मम्मी ने हमारे लिए बर्थ-डे बोनस और एक्जाम्स में अच्छे मार्क्स लाने पर एक्स्ट्रा इंसेटिव का ऐलान किया तो हमको एहसास हुआ कि ऊपर से बड़ी सख्त दिखने वाली हमारी मां का दिल नारियल की तरह से ऊपर से कड़ा और अंदर से नरम है। अपने पर्सों में दस-दस रुपयों के दस-दस नोट देखकर हम फूले नहीं समा रहे थे। अब हम बड़े हो गए थे, अपनी मर्जी के खुद मालिक थे। अब हम बहनों के पास अपने-अपने अलादीन के चिराग थे जिनमें हर महीने तेल के बदले में सौ-सौ रुपये डाल दिए जाते थे। हमने पॉकेटमनी को लेकर सुनहरे सपने देखने शुरू कर दिए। अपनी बर्थ-डे को सेलीब्रेट करने के लिए मैं रागिनी को लेकर फौरन मार्केट के लिए निकल पड़ा। दस-दस रुपयों की मिनी चाकलेट्स खरीदकर हमारा तो दिल खट्टा हो गया। आखिर इन जले दूध की दांत खराब करने वाली तीस-तीस ग्राम की चाकलेट्स पर हम बच्चे अपने तीन-तीन दिन के पॉकेट मनी को क्यों खर्च करें? इनसे अच्छी तो मम्मी की बनाई घरेलू बर्फी होती है। आइसक्रीम कोन्स खरीदने में तो हमारे बीस रुपये और खर्च हो गए। हमने फौरन ही अपनी आगे की शॉपिंग रोक दी। चालीस रुपये फूंककर भी हमारा न तो पेट भरा था और न ही हमारा मन। एक घंटे में ही हम दोनों वापस घर आ गए। मम्मी-पापा ने हमको इतने जल्दी घर वापस आते देखकर कुछ कहा तो नहीं पर दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराने जरूर लगे। हमारा मन तो फ्यूज बल्ब जैसा हो गया था।

गोपेश मोहन जासवाल
सेवानिवृत्त प्रोफेसर

मां ने कहा घर के बने सादे और पौष्टिक भोजन के सामने चाकलेट, वैफर्स, आइसक्रीम, पिज्जा, मिठाई, चाट, पकौड़े सब तुच्छ हैं।' हमको तो अब बाजार में नाहक घूमना भी बेवकूफी लगने लगी थी, 'विण्डो शॉपिंग करना कहां की अक्लमंदी है? इससे तो अच्छा है कि हम अल्मोड़ा के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लें और अगर लखनऊ या दिल्ली जाएं तो वहां कोई ऐतिहासिक इमारत देखें या किसी चिल्ड्रेन्स पार्क में घूमें।' हम दोनों बहनों को मिले इस नए ज्ञान से मम्मी-पापा इम्प्रैस्ड होने के बजाय कभी-कभी तो ही ही करके हंस देते थे तो कभी हमारी भावनाओं को चोट न पहुंचाने का ख्याल करके सिर्फ मुस्कुरा देते थे। हमने कंजूसी अपनाते हुए अपनी जमा-पूंजी में अच्छी-खासी बढ़ोतरी कर ली थी,पर मम्मी के आने वाले बर्थ-डे ने हमारी रातों की नींद उड़ा दी थी। मम्मी के बर्थ-डे के आठ दिन बाद ही पापा का बर्थ-डे भी आता है। पॉकेटमनी पाने वाले जिम्मेदार बच्चों को अपने मम्मी-पापा के बर्थ-डे पर अच्छे-अच्छे तोहफे तो देने ही चाहिए थे। रागिनी ने मुझसे पूछा, 'मम्मी के मेकअप बॉक्स और पापा के लिए पार्कर का पैन सैट कैसा रहेगा?' मैंने जवाब दिया,'इसमें तो कमसे कम तीन-चार सौ रुपये का खर्चा जाएगा। बी प्रैक्टिकल रागू! मम्मी-पापा के लिए हमारा प्यार क्या गिफ्ट की कीमतों से नापा जाएगा? मम्मी को एक अच्छी सी लिपिस्टिक और पापा को एक अच्छा सा बाल पेन देकर भी अपना प्यार जताया जा सकता है।'

मम्मी अपनी लिपिस्टिक पाकर और पापा अपना बाल पेन का सैट पाकर हमसे बहुत खुश हुए और उन्होंने रिटर्न गिफ्ट में हमको एक-एक वीडियो गेम देकर हमारी बड़ी पुरानी हसरत पूरी कर दी,पर मम्मी-पापा के लिए हम बच्चों के जन्मदिनों पर प्रैक्टिकल होने की कोई जरूरत नहीं थी। रागिनी का जन्मदिन पापा के जन्मदिन के दो दिन बाद ही पड़ता है। उसने अपने फरमाइशी आइटमों की एक लंबी लिस्ट पापा को थमा दी। साफ बात है कि इन सब बातों का हमारे पॉकेट मनी से और एक्स्ट्रा बोनस से सीधा संबंध है। हमारी हरकतों से लोगों को लगता होगा कि हम पॉकेट मनी के मामले में थोड़े लालची हैं,पर ऐसा बिलकुल भी नहीं है। हम भगवान से दुआ करते हैं कि मम्मी-पापा की डिक्शनरी में कम से कम हमारे लिए 'न' शब्द गायब हो जाए और हमारे पॉकेट मनी का साइज वो इतना बड़ा कर दें कि उसे रखने के लिए पॉकेट्स के बजाए सूटकेसेज की जरूरत पड़े।

लघुकथा गुरु जी का स्वभाव

एक गुरुजी थे। जाहिर है,उनके बहुत सारे चेले थे। उनका एक प्रिय चेला भी था जिसे भोर से आधी रात तक गुरुजी की सेवा का जिम्मा मिला हुआ था। कभी-कभार उससे गलती हो जाती। गुरुजी क्रोधी स्वभाव के थे,सो गलती होने पर कभी लात-घूंसा करते। कभी चेले का दो-दो दिन तक खाना बंद। चेला अभी लड़का ही था सो भले दिनों की आस में बगैर शिकायत किए खटता रहता। लोग बताते थे गुरुजी किसी जमाने में चीन गए थे। वहां रहने वाले उनके एक भक्त ने उन्हें चीनी मिट्टी से बना एक बहुत महंगा कप तोहफे में दिया था। गुरुजी सुबह-शाम की चाय उसी कप में पीते। चाय पीते हुए वे अपने चीनी भक्त की अमीरी और कप की अद्वितीयता के बारे में कुछ न कुछ जरूर कहते। यह सब अनगिनत बार सुन चुकने के बाद चेले के भीतर समूची चीनी प्रजाति के प्रति ऐसी नफरत जमा हो गई कि वह सपने में कई बार उस चीनी भक्त की ठुकाई कर चुका था जिसे उसने कभी देखा तक न था।

अशोक पांडे
हल्द्वानी

"हे ईश्वर! हे ईश्वर!"- उस दिन बर्तन धोते हुए चेले की तंद्रा टूटी तो उसके मुंह से बस यही निकल रहा था। उसके हाथ से फिसलकर चीनी कप चकनाचूर हो चुका था। अब गुरुजी उसकी खाल उधेड़ देंगे। उसने बगीचे की तरफ निगाह की जहां गुरुजी भक्तों को दोपहर का प्रवचन दे रहे थे। बहुत देर विचार करने के बाद चेला गुरुजी के सामने जाकर खड़ा हो गया।

"क्या बात है बेटे?" आसपास लोग थे सो गुरुजी ने नकली लाड़ जताते हुए पूछा। "गुरुजी, मृत्यु क्यों आती है?" ऐसे विषयों पर कुछ भी अंटसंट बोलने की गुरुजी की पचास साल की प्रैक्टिस थी। आंखें बंद कीं और बोलने लगे, "मृत्यु तो एक प्राकृतिक प्रक्रिया है वत्स, मृत्यु को एक न एक दिन हर किसी के पास पहुंचना है। क्या छोटा, क्या बड़ा। हर प्राणी और हर वस्तु की मृत्यु अवश्यंभावी है। हमने मृत्यु के सामना न तो भय से करना चाहिए न क्रोध से,लेकिन तुम पूछ क्यों रहे हो?" "गुरु जी ऐसा है कि मैं लंबे समय से आपकी गद्दी के नीचे से थोड़े-थोड़े पैसे चुरा रहा था। मेरी जरूरत भर के पैसे इकट्ठे हो गए हैं। बहुत खा ली आपकी मार। घर जा रहा हूं। मोमो-चाऊमीन का ठेला लगाऊंगा"। टूटे हुए कप के टुकड़े जेब से निकालकर सामने फेंककर भागता हुआ चेला पलट कर चिल्लाया, "तुम्हारे इस सड़ियल कप की भी न वो हो गई जो सबकी होती है। क्या कहते हैं, प्राकृतिक प्रक्रिया।"

व्यंग्य उधारी लाल

भई पीले सरसों की मादकता उफान पर है। वसंती बयार रुआब से बह रही है। इधर बेचारे उधारी लाल की हवा टाइट है। बस यही सोचते हैं कि देनदार बाहर मिल गए तो सत्यानाश पुरे दिन का है। सर्दी में तो रजाई में दुबकने से तगादा कहां होता है? सर्दी के मौसम में कोई दरवाजे पर भी दस्तक नहीं देता। अगर खुदा न खास्ता कोई आ भी धमका तो उसे टाला और फिर रजाई ओढ़कर चैन से जपो माला। सर्दी में न किचकिच न मचमच और न कोई मगजमारी बिल्कुल बिंदास जिंदगानी। वसंती बयार से आंखें झपकी और खुल गईं। किसी अनहोनी को होना ही थी। दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। उन्होंने पूछा-कौन? जवाब आया - 'मैं बसंतु लाल!' वह सुनते ही मेहराकर बोले-कह तो दिया कि कल आना। उधर से जवाब आया- 'मैं। बार-बार कब तक आता रहूंगा? मैंने उधार दिया है और उल्टा परेशान होकर दौड़ रहा हूं। आज सर्दी बीतने पर ही तुम्हारे द्वार आया हूं और तुम चैन से सोते मिले। मैं बसंतु लाल अभागे की तरह कष्ट सह रहा हूं। तुम मौज में हो। उठकर एक बार मुझे तो देख,कितनी हालत पतली है। उधार देकर भी भद्दी गालियां तुम्हें नहीं लग रही हैं।' उधारी लाल ने कंबल से बमुश्किल मुंह उधाड़कर कहा-'भई,माफ करना, अभी भी पैसे की तंगी है। यही विडंबना है कि तुम समय से पहले आ गए। उधारी का तगादा करना अच्छी बात नहीं है'। बसंतु लाल को बुरा लगा। यह बुरा लगने की बात भी है,जो उधार देता है उसका दिल बड़ा होता है। कुछ सोचकर वह चला गया।

यह देखकर उधारी लाल उठे और कंबल लपेटकर बाहर बरामदे में बैठ गए। सोचा चलो इस बंदे से जान बची। अब नहा धोकर तैयार हो जाऊं और बाहर टहल आऊं। चौराहे पर अचानक रामलाल बनिया दिख गए तो उन्होंने कन्नी काटनी चाही मगर वह ताड़ लिए गए। नमस्कार सेठ जी... का अभिवादन न चाहते हुए ठोक दिया। अरे! मैं तो तुम्हें ही ढूंढ रहा था और इत्तेफाक से मिल गए। सामान का उधारी इस जनम में चुका दोगे की अगले जनम में चुकाओगे। मैं जानता हूं कि आप मजाक कर रहे हैं। अरे खाक मजाक! मजाक तो तुमने दो साल से बना दिया है। पचास हजार का राशन हजम करके फूटी कौड़ी भी नहीं दिए। जब राशन का सामान लेने आए तो बोले कि इस बार वहां का चेक भज जाएगा तो इकट्ठा सारा हिसाब चुकता। यह सुनकर मैं भुगतता रहा और तुम केवल

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी

कोरा भुगतान का सपना दिखाते रहे और काजू किसमिस-बादाम,चावल-दाल अन्य वस्तुएं खा-पीकर अघाते रहे। बताओ, कब दोगे मेरी उधारी? मैं तो कहता आ रहा था कि आप चाहे कभी भी ले लो। वसंती बयार चल रही थी कि आज आपके कारण रूखी-सुखी जिंदगी आ गई। आपने तो पतझड़ ला दिया। आप सेठ जी हैं,बड़ी मांग भर सकते हैं। आपको तो अभिमान होना चाहिए कि आपने दिया है और मैंने खाया है। मेरी नजर में तगादा ठसक और ताना है। यह आपको शोभा नहीं देता है। पहले सर्दी से कांप रहा था तो गर्मी के लिए पंचमेवा खाया और आपको आशीर्वाद स्वरूप पुण्य में स्वर्ग की पक्की रजिस्ट्री करा दिया है। सेठजी आपकी नामुराद बात ने पूरा मूड खराब कर दिया। उधारी लाल मुझे तुम्हारी बात से कंपकंपी छूट रही है। अब से क्या इसी पल से किसी को भी उधारी सामान देना बंद। सेठ जी मेरा दिल खंड-खंड। यह कैसा बड़ा दिल है,जो उधारी के डर से कांप रहा है? क्या देश में बड़े उद्यमियों को बैंक उधार नहीं देती। उद्योगपति आराम से उधार लेकर उड़न छू भी हो जाते हैं तो बैंक को कोई गम नहीं होता। इसीलिए इसे कहते हैं बड़ा दिल वाला बैंक और फिर दिवालिया बैंक हो जाता है,लेकिन स्वर्ग में जगह बना लेता है। बैंक में पैसा जमाकर रखा तो क्या फायदा जबकि मेरे जैसे प्यासे को देने से मेरा कल और तुम्हारा भी कल सुधर जाएगा। यह बड़ी भारी साजिश है,जो गरीब को गरीब बना के रखा जाता है। उधारी पर देनदार तगादा करने मुंह उठाकर चले आते हैं।

कर्जा का हर्जा नहीं है। फिर तगादा वाले हद करते हैं। शर्म करो यह कर्जा बेहद कम है। सेठ जी बोले की उधार लेने वाले की जबान पर भरोसा करेंगे,तो ब्याज से निपटते-निपटते मूलधन तंग करने लगेगी। उधारी में मौसम के इंतजार से कुछ नहीं होता। सुखद वसंती बयार अपने आप नहीं बहता,उसे बहाया जाता है।

अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों में अंतर्निहित दर्शन

समीक्षा

यदि कोई प्रकृति प्रेमी है और पर्यावरण तथा सनातन धर्म के प्रति गहरी रुचि रखता है तो उसे निम्नलिखित पुस्तक पढ़ने योग्य लग सकती है। पुस्तक में पाया गया है कि मुख्य सिद्धांत और धर्म के कुछ अन्य विश्वासों के अंतर्निहित विचार भौतिकी और खगोल भौतिकी में कुछ आधुनिक विज्ञान सिद्धांतों के निष्कर्षों के समान हैं। पुस्तक में यह भी बताया गया है कि कैसे धर्म के सिद्धांतों,संस्कारों और रीति-रिवाजों ने भारत में अतीत में भौतिक विकास हासिल करने के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने में मदद की।

वैदिक सनातन धर्म के संस्कार और रीति-रिवाज रूढ़िवादी नहीं हैं-जैसा कि कुछ तर्कवादियों द्वारा प्रचारित किया जाता है, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञान और बुद्धि से भरे हुए हैं,जिन्होंने हाल के समय तक प्रकृति और समाज को संरक्षित करने में मदद की है, लेकिन ये दोनों अब बहुत तेजी से खराब हो रहे हैं। वैदिक सनातन धर्म में सर्वव्यापी ब्रह्म की अवधारणा आधुनिक विज्ञान में ऊर्जा के क्वांटम क्षेत्रों की अवधारणा के काफी समान है,क्योंकि दोनों निराकार, अनंत और सर्वव्यापी हैं। धर्म के सिद्धांतों और संस्कारों में कई समान वैज्ञानिक अर्थ हैं। इसके अलावा यदि कुओं/नदियों और पौधों/पेड़ों जैसे प्रकृति के कुछ तत्वों को देवता माना जाता है और उनकी पूजा की जाती है तो यह रूढ़िवादी नहीं है,बल्कि धर्म के माध्यम से प्रकृति की सुरक्षा के लिए मजबूत सामाजिक जागरूकता पैदा करने में मदद करता है।

यदि लोग किसी चीज की पूजा करते हैं तो वे उसे नष्ट नहीं करेंगे,यह एक सरल मानस है। आधुनिक वैज्ञानिक दुनिया में कहीं भी ऐसी कोई जागरूकता मौजूद नहीं है और इसका परिणाम इन दिनों जल और वन संसाधनों का गंभीर क्षरण है। क्या तर्कवादी धार्मिक अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों में ऐसे अंतर्निहित दर्शन को समझ सकते हैं? इसलिए यह पुस्तक प्रकृति प्रेमियों को यह समझने के लिए अवश्य पढ़नी चाहिए कि वैदिक सनातन धर्म में प्राचीन विज्ञान ने हमारे पर्यावरण की रक्षा में कैसे मदद की,जो अब नष्ट हो रहा है।

पुस्तक - वैदिक सनातन धर्म में विज्ञान और पर्यावरण
लेखक- विजय कुमार पांडे
प्रकाशक- नोशन प्रेस, चेन्नई।
प्रकाशन वर्ष-2024
मूल्य- रु. 240
समीक्षक : डॉ.श्रीकांत तिवारी

यात्रा वृत्तांत

जापान का मैनचेस्टर
ओसाका सिटी

जापान एक ऐसा देश है,जो आपदाओं से भरा है। जापान को बहुत पहले ही (19 वीं शताब्दी में) समझ में आ गया था कि कृषि से खाया-पिया तो जा सकता था,पर आर्थिक ताकत नहीं बना जा सकता। उसने अपने मानव को खूब निखारा और कमाल के संसाधन दिए। आज की बात नहीं, 19 वीं शताब्दी के अंत तक हर देशवासी साक्षर था, किताबें पढ़ने में दुनिया में शीर्ष पर था, चीन और रूस पर दादागिरी करता था और दोनों विश्व युद्धों में हिस्सा लिया।

शैलेन्द्र प्रताप सिंह
से.नि., पुलिस महानिरीक्षक

जापान द्वितीय विश्व युद्ध में जीतता हुआ भारत तक आ गया था। फिर परमाणु बमों का अमेरिकी आक्रमण झेला,तब जाकर कहीं आत्मसमर्पण किया,पर उनकी लगन देखिए कि मानव श्रम को शिक्षित/ प्रशिक्षित कर उसे मानव पूंजी बनाना जारी रखा। तकनीक और सुसज्जित उपकरणों में महारत हासिल की और फिर ऐसा निर्यात शुरू किया कि वर्ष 1985 में राष्ट्रपति रीगन को व्यापार संतुलन ठीक करने के लिए डॉलर अवमूल्यन करने पर बाध्य किया। टोयोटा, मित्शुबुसी, कैनन, निसान, होंडा, यामाहा, तोशिबा, सोनी, पैनासोनिक, निप्पॉन, माजदा आदि दुनिया में मशहूर कंपनियां जापान की ही हैं।

भारतीय बौद्ध धर्म विशेषकर ध्यान/झेन/जेन चीन और कोरिया के रास्ते जापान पांचवीं-छठी शताब्दी में जापान पहुंचा था जिसने वहां लोगों में वैज्ञानिक सोच विकसित की,उन्हें ध्यानी और अनुशासित बनने में मदद की। पिछले 6 महीने में मेरी यह पांचवीं विदेश यात्रा है। सिंगापुर एयरलाइंस से हम ओसाका पहुंचें। यह समुद्र से मिला एअरपोर्ट और शहर है। बाहर यात्री की तरह निकलिए तो पूछताछ करने के अपने मजे हैं। काफी लोग अंग्रेजी नहीं समझते हैं। एक परिवार की एक लड़की ने अंग्रेजी समझी,होटल गूगल पर डाला,ट्रेन स्टेशन पता चला। अपने माता-पिता का बताकर खुद आकर मशीन पर टिकट निकाला,फिर समझाया कि सामने स्टेशन है और अगला ही स्टॉप है। साफ है लोग मदद करना चाहते हैं,पर भाषा की समस्या है। एअरपोर्ट और हमारे होटल के बीच समुद्र है। रेल का लंबा पुल है। समुद्र पर ट्रेन का चलना सुखद लग रहा था। जब होटल के कमरे पर पहुंचे तो वह भी बिल्कुल समुद्र किनारे। मजा आ गया। पर्यटक को और क्या चाहिए? हमने सिंगापुर के बिजनेस लाउंज में ही ब्रेकफास्ट किया। फिर वहीं से दूसरी फ्लाइट से ओसाका आए।

ओसाका को 'जापान का मैनचेस्टर'कहा जाता है,क्योंकि यह जापान का एक महत्वपूर्ण कपड़ा केंद्र है। योडो नदी के कारण कपास मिलों के लिए यहां पानी की प्रचुर आपूर्ति है। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड की तरह पूर्वी छोर पर होने के कारण जापान करीब साढ़े तीन घंटे इंडिया से आगे है। शाम होटल से निकलकर जापान टहलने और समझने निकले। हवा बहुत तेज और ठंड थी। न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया की ठंडी मदभरी हवाएं याद आ गई। होटल से मिला हुआ रेलवे स्टेशन है सो वहां खूब चहल पहल रहती है। लोग तेजी से आ जा रहे थे। एक बात स्पष्ट हुई कि जिस तेजी से लोग बिना किसी शोर-शराबे के आ जा रहे थे। बताया जाता है और साफ लगा भी कि लोग वर्कोहोलिक्स थे। वर्कोहोलिक्स वह व्यक्ति होता है,जो बाध्यकारी रूप से बलपूर्वक काम करता है। यहां लोग कार्य के प्रति समर्पित हैं। यह भी देश की सफलता का एक राज है।

लोगों के बीच यहां भारतीय संस्कृति ही दिखी। अपने बुजुर्गों, बच्चों और परिवार के साथ घूमते टहलते और खरीदारी करते मिले। अच्छा लगा कि लोग भारतीय परिवारों की तरह एक दूसरे से जुड़े हैं। चावल के साथ विविध तरह के पकवानों के पैक्ड भोजन को डिपार्टमेंटल स्टोर में लोग खूब खरीद रहे थे। लगा लोग-बाग यहां पैक्ड खाना भी काफी पसंद करते हैं। शायद घरों में खाना बनाने का एक अच्छा विकल्प लोगों के पास है।

जापान तकनीकी रूप से बहुत आगे है। विकसित देश की कहानी दुनिया को सुना रहा है। होटल की खिड़की से सुबह एक अस्पताल दिखा जिसके ऊपर हेलीपैड बना था। साइकिल चलाने वालों का रास्ता अलग है। कहीं भी गंदगी नहीं दिखी। जिस तरह देर रात तक लड़कियां टहल रही थी,जिस तरह उनका पहनावा था, उनके हाव भाव थे। साफ है कि यह देश लिंगभेद से ऊपर है। यहां बौद्ध धर्म भी है तो प्राचीन शिंटो धर्म भी है। लोगों को किसी से भी परहेज नहीं,सलाम सबसे है। यह लोग समझ गए हैं कि धर्म आस्था की बात है,ढोने की बात नहीं है। बस सबको सलाम। एक तरह से नास्तिक सी सोच। जापान की ही नहीं, धर्म के मामले में यही एशिया के तेजी से विकास कर रहे चीन, कोरिया, सिंगापुर आदि की भी है।

जापानी व्यंजनों में टेम्पुरा बहुत लोकप्रिय है जिसमें आमतौर पर चावल के आटे के घोल में डुबोयी गईं सब्जियां, समुद्री भोजन और सब्जियां होती हैं,डीप फ्राई किए जाते हैं और उबले हुए चावल (अक्सर सोया सॉस के साथ) पर परोसा जाता है या अलग से भी। एक तरह से टेम्पुरा मतलब भारतीय पकौड़ियां हैं। मैंने खाई पर बच्चों से कहा कि आज कहने के लिए खा लिया कि टेम्पूरा खाया पर आगे से नहीं खाऊंगा। अब बहुत तली चीजें खाने की उम्र नहीं रही। मुझे टोफू (सोयाबीन दही) से बने विभिन्न व्यंजन पसंद आए विशेषकर टोफू सलाद। टोफू को अकेले या मिसो सूप (किण्वित सोयाबीन से बना) के साथ परोसा जाता है।

हमने यहां हम पांच लोगों के लिए सात दिन का फर्स्ट क्लास रेल पास ले लिया गया था। यहां रेल पास लेकर ट्रेन से खूब टहलिए। टहलने का खूब आनंद लीजिए। टहलने का एक दबाव भी रहता कि जब पास फ्री है तो खूब टहलो। हम लोग ट्रेन से टहल रहे हैं। ओसाका मेन मार्केट, मेन शहर आए।

फिर अपराह्न ओसाका से बुलेट ट्रेन से क्योटो गए। मेरी बुलेट ट्रेन प्लेट फार्म न. 23 पर थी। साफ है कि नई दिल्ली जैसे रेलवे स्टेशन पर 10-12 ही प्लेटफार्म थे। स्टेशन पर अनुशासित यात्रियों को देखते बनता है। रास्तों के किनारे

तरह-तरह की दुकानें थीं। एक शॉप पर मैंने पकौड़े बनते देखे,जिन्हें आप पकौड़ा भी कह सकते हैं। हमें कुछ सूमो पहलवान दिखे। एक सूमों से वार्ता हुई, वह कुछ-कुछ अंग्रेजी बोल समझ रहा था। प्लेटफार्म पर एक भारतीय अमेरिकन मिले। क्योटो होकर हमारी ही बुलेट ट्रेन से वे टोक्यो जा रहे थे। बात हुई। हफ्तों से जापान टहल रहे थे। बताया कि जापान बहुत प्यारा और पसंदीदा देश है,जहां सफाई है,सुरक्षा है और अनुशासन है। उनका भी फोटो मैंने खींचा। मात्रा 12-13 मिनट में बुलेट ट्रेन से हम सब क्योटो आ गए। बुलेट ट्रेन से लंबी यात्रा करने में मजा आया। क्योटो का नाम तब बहुत लिया जा रहा था जब मोदी जी पहली बार बनारस से चुनाव लड़ रहे थे। कहा जा रहा था कि बनारस को वह क्योटो बना देंगे।

बेटी ने सारे होटल स्टेशन के पास ही कराए थे। हमारा होटल बिल्कुल क्योटो स्टेशन के सामने ही था। बस एक मिनट की दूरी पर। यहां आकर लगा कि जापान में सिर्फ बुलेट ट्रेन ही नहीं है,जापान बुलेट ट्रेन की तरह तेज रफ्तार से दौड़ता देश है, वहीं अगर जरूरत नहीं है तो पैदल या साइकिल से भी चलता देश है। जापान में ऐसा रेल नेटवर्क किसी अजूबे से कम नहीं,जिस देश ने 1945 में परमाणु त्रासदी को झेला और इसके मात्र 19 वर्षों में एक बेहतर रेल व्यवस्था कायम करके बुलेट ट्रेन का परिचालन शुरू कर दिया,वह किसी चमत्कार से कम नहीं है। यह पूरे देश की सोच दर्शाता है। सन् 1964 से लेकर 2019 आ गया और बताया गया कि आज तक एक भी दुर्घटना नहीं हुई है। यह भी किसी अजूबे से कम नहीं है। बुलेट ट्रेन को जापान में 'शिनकानसेन', कहते हैं। लगभग 250 किमी की रफ्तार वाली हाई-स्पीड शिंकानसेन ट्रेनें प्रमुख शहरों को जोड़ती हैं। सभी ट्रेनें समय की पाबंदी के लिए जानी जाती हैं और 90 सेकंड की देरी भी देरी मानी जाती है।

जापान में रेल परिवहन,यहां के यातायात/ आवागमन का एक प्रमुख साधन है। जिन देशों की परिवहन व्यवस्था शानदार है,वहां लोग प्राइवेट वाहनों से ऐसी व्यवस्था को ज्यादा तरजीह देते हैं। दिल्ली मेट्रो का उदाहरण हमारे सामने है। कई जापानी रेलवे कंपनियां क्षेत्रीय और स्थानीय यात्री परिवहन बाजारों में प्रतिस्पर्धा करती हैं। उदाहरण के लिए हम लोग जे आर उद्यम से यात्रा कर रहे थे। इसी तरह की किंतेत्सु रेलवे, सेबू रेलवे और कीओ कॉर्पोरेशन जैसी अन्य रेलवे कंपनियां हैं। स्टेशनों पर,उनके पास ही डिपार्टमेंट स्टोर होते हैं, तमाम अन्य दुकानें / सुविधाएं होती हैं। होटल टॉयलेट सीट सदैव आन रहती है, गर्म रहती है, सुखद लगती है। कई अन्य सुविधाओं से भरी होती है। होटल के पास की ही एक बिल्डिंग में काम हो रहा था,पर ऐसी ढकी कि मजाल की कहीं धूल या गंदगी दिख जाए।

खाना खजाना

पान से बनी कुकीज

खाना खाने के बाद पान तो आप सभी ने खाया होगा,लेकिन क्या पान से बनी कुकीज कभी खाई है! आज आपको बनाना बताते हैं,पान के फ्लेवर वाली मिलेट कुकीज,जो स्वाद के साथ-साथ सेहतमंद भी है। कंगनी मिलेट में कैल्शियम और फाइबर काफी मात्रा में होता है। इसके अलावा इसमें विभिन्न प्रकार के मिनरल्स, एंजाइम्स और विटामिन्स पाए जाते हैं। कंगनी में फॉलिक एसिड, मैग्नीशियम, पोटैशियम और बीटा-केरोटिन पाया जाता है,जो हमारी सेहत के लिए बेहद ही फायदेमंद है और वजन को कम करने में सहायक है।

सामग्री

- 1/2 कप मिक्स मिलेट आटा (कंगनी, कोड़ो)
- 1/2 कप गेहूं का आटा
- 1/2 कप पिसी चीनी
- 1/2 कप बटर
- 3-4 ताजे पान के पत्ते
- 1 बड़ा चम्मच गुलकंद थोड़ी सी सौंफ
- 1/2 टी स्पून बेकिंग पाउडर
- 1 चुटकी नमक
- 2 चम्मच दूध

बनाने की विधि

प्रीतम कोठारी
फूड ब्लॉगर

सबसे पहले एक बाउल में मिलेट फ्लोर और गेहूं का आटा डालें। अब इसमें बेकिंग सोडा और नमक डालकर अच्छे से मिक्स कर लें। एक बर्तन में चीनी और मक्खन को हल्का होने तक फेटे। इसके बाद आटे वाला ड्राई मिक्सचर मिक्स कर दें। पान के पत्तों को बारीक-बारीक कट करके डाल दें। गुलकंद भी मिक्स कर दें और सौंफ डालकर हाथ से गूंथ लें। अगर जरूरत लगे तो ही दूध डालें नहीं तो दूध डालने की जरूरत नहीं है। अब तैयार आटे से छोटे-छोटे कुकीज बनाएं। एक टूथपिक लें और उसकी हेल्प से इसके ऊपर डिजाइन बना लें। कुकीज पर थोड़े से बारीक कटे पान के पत्ते और गुलाब के पत्ते लगा दें। ओवन को 10 मिनट के लिए 180 डिग्री पर प्री हिट कर ,प्रीहीट ओवन में कुकीज को सुनहरा होने तक या फिर 20 से 25 मिनट तक बैक कर लें। कुकीज को ओवन से बाहर निकालें और अच्छे से ठंडा होने दें। अब चाय दूध या फिर ऐसे ही इसको खा सकते हैं। अगर आपके पास गुलकंद नहीं है तो आप इसकी जगह गुलाब की पत्तियां भी इसमें मिक्स कर सकते हैं।

फिट रहिए टेम्पटिंग नहीं

फिट और टेम्पटिंग होने में अंतर है। ज्यादातर महिलाएं अपने को सजाने में समय बर्बाद करती हैं। ताकी सुंदर और आकर्षक दिखें। यहीं से आपके शरीर का सत्यानाश होता है। स्वस्थ रहने में ध्यान नहीं देती। अगर आपसे पूछा जाए यह झूठी पॉलिश करने से क्या लाभ होता है तो जबाब गोल-मोल मिलेगा। वास्तव में वह दिमागी फितूर है। हां सजना संवरना भी सकारात्मक महसूस कराता है तो कीजिए,लेकिन अपने आपको स्वस्थ भी रखिए।

आप योगा कीजिए, आप जिम जॉइन कीजिए। खाने-पीने पर ध्यान दीजिए, बेवजह तेल-मसाले से पूर्ण भोजन लेने से बचिए। बाजार के खाना से परहेज रखिए। खाने में सलाद,फल का प्रयोग ज्यादा कीजिए। गर्मी आपके दरवाजे पर दस्तक दे चुकी है। आप पेय पदार्थ का इस्तेमाल ज्यादा करें तो और बेहतर है। घर में शर्बत, सत्तू, लस्सी,जीरा पानी बनाकर पीजिए और घर के लोगों को पिलाइए। डिब्बा बंद पेय पदार्थों को पिलाकर आप समय तो बचा सकती हैं, लेकिन स्वास्थ्य नहीं। आपके शरीर में लिक्विड की मात्रा बढ़े रहने से स्फूर्ति और ताजगी बनी रहती है और आपका मन भी अपने कार्यों में लगा रहेगा। इस मौसम में लोगों के अंदर आलस ज्यादातर बना होता है। कई लोग सुबह की प्यारी नींद में अलसाए रहते हैं और उनकी स्वास्थ्य की गाड़ी छूट जाती है। यह तब होता है जब आप मानसिक और शारीरिक तौर पर कमजोर होते हैं। भरपूर नींद लीजिए पर एक समय पर। कई बार वर्कलोड इतना होता है जिससे हमारी नींद पूरी नहीं होती और हम थके से थके रहते हैं। बीमार रहने का यह भी एक कारण है। शरीर को फीट रखने के लिए भरपूर पानी, हेल्दी फूड,योग बेहद महत्वपूर्ण है। स्मोकिंग और एल्कोहल दूरी रखिए। आप स्वस्थ रहेंगे तभी आप तन-मन दोनों से फिट दिखेंगे। फीट रखने के लिए खुद की केयर करना बेहद जरूरी है। आप सही देखरेख में अपने को फिट ज्यादा रख सकती हैं। इससे आपका शरीर स्वस्थ रह सकता है।

रानी प्रियंका वल्लरी
स्वतंत्र लेखिका

साप्ताहिक राशिफल

-पं.मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

मेष
इस सप्ताह आपके कार्यों में प्रगति के संकेत बन रहे हैं। आप कार्यस्थल पर सहयोगियों से सहयोग की उम्मीद कर सकते हैं वर्तमान ग्रह स्थिति में व्यापार नौकरी में विकास के अवसर प्राप्त करने के लिए आपको वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग लेने की कोशिश करनी होगी।

वृष
इस सप्ताह आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि और भाग्य का सहयोग प्राप्त होने के प्रबल संकेत प्राप्त हो रहे हैं। आपका व्यापार बढ़ेगा और अपने सामाजिक प्रभाव की वजह से आपको सभी महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। पेशेवर जीवन में आप आगे बढ़ेंगे और आप के मान सम्मान में वृद्धि होगी।

मिथुन
यह सप्ताह प्रसन्नता और कार्य सिद्धियों के लिए शुभ नहीं है आपको कुछ स्वास्थ संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। संबंधों को बनाए रखने के लिए बेहतर होगा कि आप अनावश्यक बहस से बचें, परिवारिक जीवन और पिता के साथ संबंधों के लिए समय अनुकूल रहेगा। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारियों का समर्थन और सम्मान देना आपको प्रसन्नता देगा।

कर्क
इस सप्ताह साझेदारी उपक्रमों को बेहतर करने के आपके प्रयास उत्तम रहेंगे। आपको मानसिक हताशा और निराशा का अनुभव होगा। आपको अपने आत्मविश्वास को उच्च रखना होगा अन्यथा आपकी कार्यकुशलता प्रभावित हो सकती है। आसपास के लोगों रिश्तेदारों और भाई बहनों का सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह
इस सप्ताह आप मुद्दों का समाधान निकालने में सफल रहेंगे तथा किसी मनपसंद स्थान की यात्रा पर जाने से आपका मन खुश रहेगा। आपके वैवाहिक जीवन के आनंद के लिए उत्कृष्ट रहेगा। आपको कुछ निराशा का अनुभव होगा क्योंकि महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निराशा और विफलता की प्राप्ति हो सकती है इस समय में महत्वपूर्ण उपक्रमों से जुड़े कार्य न करें।

कन्या
इस सप्ताह आप अच्छे सलाहकार के रूप में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करेंगे। आपकी कल्पना शक्ति के मजबूत होने से नए विचारों का जन्म होगा। आपको एक शांति दृष्टिकोण के साथ इन मुद्दों को संभालने की सलाह दी जाती है आप किसी दूरस्थ स्थान की यात्रा पर जा सकते हैं कार्य क्षेत्र में आपको वांछित प्रदर्शन करने में सफलता मिलेगी।

तुला
इस सप्ताह शांति रहेगी कार्य क्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी और सम्मान की भी प्राप्त होगी। जीवन साथी के साथ आपकी बहुत अधिक अनुकूलता रहेगी आपका जीवन साथी आपका सबसे अच्छा दोस्त और सलाहकार रहेगा।

वृश्चिक
इस सप्ताह सामाजिक गतिविधियों और व्यापारिक गतिविधियों के लिए यह समय उत्कृष्ट रहेगा। लोग आपकी कुशलता और प्रबंधन की क्षमता की सराहना करेंगे। आपका पूरा समर्थन और स्नेह आपके रिश्तेदारों दोस्तों और भाई बहनों के साथ रहेगा। आपको कुछ घरेलू मुद्दों की वजह से मानसिक अशांति परेशान कर सकती है।

धनु
इस सप्ताह का आरंभ अचानक से वित्तीय लाभ और भाग्य का पक्ष लेकर आएगा। सामाजिक गतिविधियों के लिए शुभ प्रतीत हो रहा है लेकिन अपेक्षित उत्साह और आत्मविश्वास की आपने कमी रहेगी। लोग आपके मिलनसार व्यवहार, शिष्टाचार की सराहना करेंगे। कार्यक्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी।

मकर
इस सप्ताह आपके व्यक्तित्व विकास और स्वास्थ्य के बेहतरी के लिए अत्यंत शुभ साबित होगी। आपके आत्मविश्वास और कार्यकुशलता में सुधार होगा। घर में शांति और सौहार्द का वातावरण रहेगा और जीवन में प्रगति के शुभ संकेत मिल रहे हैं कार्य क्षेत्र में भी आपकी प्रगति होगी।

कुंभ
इस सप्ताह अवांछित अवरोध आने के कारण कार्य सिद्ध नहीं हो पाएंगे इससे आप में निराशा और हताशा की स्थिति रहेगी फिर भी इस समय में यात्राओं पर जाना आपके लिए लाभकारी रहेगा। आप अपने खर्च और प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रबंधन करने की योजना बनाएंगे।

मीन
इस सप्ताह के शुरुआत में आपकी आय और व्यवसाय में वृद्धि होगी। आपको अपने सहकर्मियों का सहयोग और समर्थन मिलने की संभावना बन रही है आप पर अधिक मानसिक तनाव, निराशा और हताशा रहने से महत्वपूर्ण कार्यों के सिद्धि में बाधा आएगी विपरीत परिस्थितियों में स्वयं को प्रभावित होने से बचाने के लिए आप धैर्य बनाए रखें।

वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

काकुरो 79

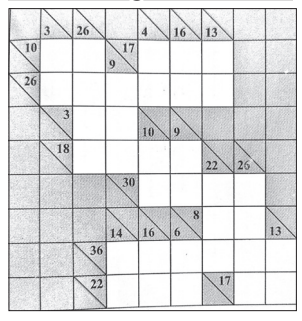

काकुरो 78 का हल

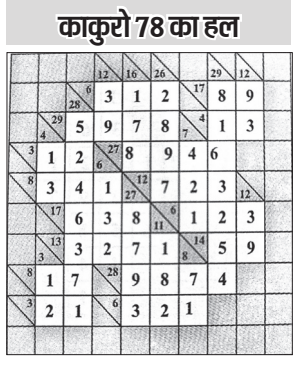

मौन आमंत्रण देता औली का सौंदर्य

उतराखंड के चमोली जिले मे बद्रीनाथ मार्ग पर जोशीमठ नगर पिछले कुछ महीनों से चर्चा में है। कमजोर पहाड़ियां दरक रही हैं। घरों में दरारें आ गई हैं और लोग डर के साए में जी रहे हैं। भविष्य में क्या होगा कोई नहीं जानता। इसी जोशीमठ के ठीक ऊपर है औली,जिसे हम आज स्कीइंग के लिए जानते हैं। सुना है औली रोप वे का एक टावर भी खतरे में है। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि भविष्य में औली के ढलानों में भी दरारें पड़ सकती हैं।

बुगयाल हिमालय में वृक्ष समाप्ति रेखा है और शाश्वत हिम रेखा के बीच का क्षेत्र है,जो गर्मियों में अतुलनीय हरियाली की ओढ़नी ओढ़ लेता है। अधिक ऊंचाई पर स्थित होने के कारण यहां वृक्ष बहुत कम पाए जाते हैं। यहां की घास में छोटे-छोटे रोएं पाए जाते हैं,जो घास को अत्यधिक सर्दी से बचाते हैं।

औली सालों से आसपास के गांवों के पशुओं का चरागाह था। 1962 में भारत पर चीन के आक्रमण के बाद इसे सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र माना गया और इस हेतु जोशीमठ से औली तक हल्के वाहनों को पहुंचाने के लिए सड़क बनाई गई, जो 'वनटन रोड' के नाम से जानी जाती है। औली आज अपने खुबसूरत स्कीइंग मैदानों के लिए जाना जाता है। कई स्कीइंग प्रेमियों ने इसकी तुलना स्विट्जरलैंड के मैदानों से की है। 1939 में औली में क्रिसमस के अवसर पर जो खेलकूद हुए, उसे ही देश की पहली स्कीइंग प्रतियोगिता माना जाता है,लेकिन सही मायने में औली में स्कीइंग के खेल की शुरुआत करने का श्रेय भारत तिब्बत सीमा पुलिस को जाता है जिसने सतर के दशक के शुरुआती सालों में अपने जवानों को स्कीइंग के खेल का प्रशिक्षण देने हेतु विंटर क्राफ्ट सेंटर की स्थापना की।

1978 से यहां स्कीइंग का खेल बकायदा शुरु हुआ। तब से लेकर अब तक पुलिस खेलों के अलावा कई राष्ट्रीय शरद कालीन स्कीइंग प्रतियोगिताओं का आयोजन यहां हो चुका है। औली के ढलानों को विश्व के कई प्रसिद्ध ढलानों के समान माना जाता है। ये ढलाने समुद्र सतह से लगभग 2519 से 3049 मीटर ऊंचाई तक फैली हुई हैं।

1984 मे गढ़वाल मंडल विकास निगम ने औली को पर्यटन विकास के मद्देनजर सेंटर के रुप में विकसित करने की पहल की। आज यहां सैलानियों के ठहरने के पर्याप्त इंतजाम है। अब यहां जनवरी से मार्च तक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। अनुभवी प्रशिक्षक ऑन द स्पाट प्रशिक्षण देते हैं। तब यहां का नजारा देखने लायक होता है। अगर आपको ठंडी हवाओं और गुनगुनी धूप के बीच बर्फ में फिसलने का मजा लेना है तो फरवरी में यहां अवश्य जाएं।

यदि वाहन से जाए तो जोशीमठ से औली की दूरी 12 किलोमीटर है,पर अगर ट्रेकिंग करते हुए जाए तो 5 किलोमीटर की सीधी चढ़ाई चढ़ते हुए और बर्फ में चलते हुए औली पहुंचेंगे। ट्रेकिंग हेतु कपड़े, जूते, छड़ी आदि जरूरी सामान आपको जोशीमठ में किराए पर मिल जाएगा।

दीपक नौगांई
शिक्षक, नैनीताल

पिछले कुछ सालों में यहां अब बहुत कुछ बदल गया है। अब तो कई होटल, रिसोर्ट बन गए है। एक कृत्रिम झील भी बनाई गई है। कुछ साल पहले गुप्ता बंधुओं के बच्चों की शादी से औली काफी चर्चा में आया था। मामला कोर्ट तक भी गया था। सारे नेता शादी में मौजूद थे। इस चर्चित शादी समारोह से औली के प्राकृतिक स्वरूप से कितनी छेड़छाड़ हुई,इसकी चिंता किसी ने नहीं की।

औली मूलतः निकट के गांवों का गोचर है। यह एक प्राकृतिक मैदान है,जिसे पहाड़ में बुगयाल कहा जाता है। बुगयाल यानी मखमली घास की लहलहाती धरती। छह महीने यह बुगयाल बर्फ से ढका रहता है।

जोशीमठ- औली रोप वे

औली की सैर का सबसे बड़ा आकर्षण है जोशीमठ- औली रोप वे है। यह एशिया का दूसरा सबसे ऊंचा रज्जू मार्ग है। 1927 से 3027 मीटर की ऊंचाई तक यह रोप वे लगभग चार किलोमीटर लंबा है। इस में बैठकर आप अत्यधिक ऊंचाई से पूरे जोशीमठ व अलकनंदा नदी का अद्भुत सौंदर्य देख सकते हैं।

रोप वे का आकर्षण तब और बढ़ जाता है, जब हिम आच्छादित उतराखंड की सबसे ऊंची पर्वत चोटी नंदा देवी सहित माणा पर्वत, द्रोणागिरी, हाथी पर्वत, गोरी पर्वत आदि चीटियां आंखों के सामने अपना संपूर्ण वैभव और सौंदर्य लिए खड़ी नजर आती हैं।

औली पहुंचते ही चारों तरफ का सौंदर्य आपको मंत्रमुग्ध कर अपने मोहपाश में बांध लेता है। अरुणोदय की बेला में हिमानी ठंडक की मदमाती महक के बीच में स्वर्गीय सुषमा की रंगत देखते ही बनती है। पक्षियों के कलरव व चहचहाट से तरुवर व आसमान गूंज उठता है। बादलों के पीछे आंख मिचौली खेलता रक्तिम रवि अपनी स्वर्णिम रश्मि से प्रकृति के कपोलों पर हल्की सी चपत मारता प्रतीत होता है। यही है औली का जादूई संसार जो प्रकृति प्रेमियों को यहां बार-बार आने का मौन निमंत्रण देता है। अगर आप जोशीमठ या बद्रीनाथ जाए तो समय निकालकर औली के भी दर्शन जरूर करें।

सुल्ताना डाकू के अड्डे पर छापे की योजना

दल-बल सहित 'फ्रेडी की सेना' रोज मार्च का स्वांग करते-करते रेलवे लाइन के किनारे चलते हुए हरिद्वार स्टेशन के मालगोदाम जा पहुंचे। फौरन से पेश्तर अपने इंतजार में खड़ी मालगाड़ी में सवार होकर अपने 'रण-क्षेत्र' को कूच कर गए। इस रवानगी के बारे में जिम कॉर्बेट ने अपनी पुस्तक माई इंडिया में तफसील से लिखा है। वो दर्ज करते हैं कि, "यह सब काम इतनी होशियारी से अंजाम दिया गया था कि गांव के पाही कुत्तों तक ने आवाज नहीं की।

गांवों के ये देसी कुत्ते दुनिया के बढ़िया से बढ़िया कुत्तों से भी ज्यादा बेहतर चौकीदार साबित होते हैं। बरसाती कीचड़ में ढाई सौ जवानों के पांवों से बने गड्ढों में तेज बरसात के दौरान बमुश्किल खद-बद करते-करते ही कदम आगे बढ़ा पा रहे थे। मीलों तक हम हाथी घास में चले। घास की ऊंचाई मेरे सिर से भी ऊपर निकल रही थी। गीली जमीन पर चलने में अपना संतुलन बनाए रखना मेरे लिए बड़ा मुश्किल होता जा रहा था, क्योंकि एक हाथ से मैंने अपनी आंखों पर ओटकर रखी थी। ओट करना इसलिए जरूरी था कि हाथी घास के कड़े सिरे, उस्तरे जैसे धारदार और नुकीले थे। मैं हमेशा से फ्रेडी के 20 स्टोन चार पाउंड वाले शरीर में भरी ताकत की तारीफ तो करता रहा हूं, लेकिन उस रात मैं फ्रेडी कायल हो गया। यह सच है कि वह मेरे मुकाबले थोड़ी बेहतर जमीन पर चल रहा था, जबकि मैं कीचड़ में था, लेकिन फिर भी मुझसे नौ स्टोन ज्यादा वजन के बावजूद फ्रेडी की फुर्ती देखने के काबिल थी। पूरे सफर में एक बार भी कहीं फ्रेडी दम भरने को रुका नहीं। हम लोग रात के नौ बजे चले थे। अब सुबह के दो बजे रहे थे। मैंने फ्रेडी को कानों-कान संदेशा भिजवाकर पूछा कि क्या हम सही दिशा में चल रहे हैं? मैंने यह संदेशा इसलिए भेजा था, क्योंकि पिछले एक घंटे से हम उत्तर दिशा छोड़कर पूरब की तरफ बढ़ रहे थे, जबकि जाना हमें उत्तर की तरफ ही था। काफी देर बाद एक-एक जवान से मुंह और कान से होता हुआ फ्रेडी का जवाब मेरे पास आया, "कप्तान साब बोलते हैं कि सब ठीक है।" कीचड़ में, कहीं पेड़ वाले तो कहीं झाड़ी वाले जंगलों, कभी ऊंची घास में दो घंटे भटकने के बाद मैंने फ्रेडी को दूसरा संदेशा भेजा। मैंने उसे कहलवाया कि वह जवानों की लाइन को रुकवा दे ताकि लाइन के अगले सिरे पर पहुंचकर उससे बात कर सकूं।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

लाइन के पिछले सिरे से आगे की तरफ जब मैं बढ़ा तो हर जवान के चेहरे पर निगाह डालता गया था। वे सब एकदम खामोश थे, क्योंकि पहले ही उन्हें बता दिया गया था कि वे बोलेंगे नहीं। सबके चेहरे पर थकान पुती हुई थी। फ्रेडी और एंडरसन लाइन के अगले सिरे पर मौजूद थे। उनके साथ उनके चार रहनुमा (रास्ता बताने वाले) भी थे। फ्रेडी ने मुझसे पूछा कि, क्या कुछ गड़बड़ हो गया? मुझे मालूम था कि वह जवानों के बारे में पूछ रहा है। मैंने उसे बताया कि जवान तो ठीक हैं, लेकिन बाकी सब कुछ एकदम गड़बड़ हो गया है। हम लोग पिछले कई घंटों से सिर्फ गोल-गोल घूम रहे हैं। जंगलों में अपनी जिंदगी का बड़ा हिस्सा बिताने की वजह से मुझे मालूम है कि जंगल में भटक जाना कितना आसान है। मैंने अपने तजुर्बे से ऐसा दिशा ज्ञान हासिल कर लिया था, जो कि रात में भी उतना कारगर था जितना कि दिन में। जब हम दो घंटे पहले उत्तर से पूरब की तरफ मुड़े थे तब भी मुझे दिशा बदलने का अंदाजा उतनी ही साफ तौर पर हुआ था जितना कि यह पैदल यात्रा शुरू करते वक्त जब हमने पहली बार दिशा बदली थी। घंटे भर पहले ही हम एक सेमल के पेड़ के नीचे से गुजरे थे। इस पेड़ की पहचान यह थी कि इस पर एक गिद्ध का घोंसला था। अब मैंने जब फ्रेडी को रुकने का संदेशा भिजवाया तो फिर एक बार हम लोग इसी पेड़ के नीचे थे।"

फ्रेडी के चार रहनुमाओं (रास्ता बताने वाले) में से दो सुल्ताना के गिरोह के भांतू थे। कुछ दिन पहले वे हरिद्वार के बाजार में पुलिस के हत्थे चढ़ गए थे। सुल्ताना के अड्डे पर मारे जाने वाले छापे की योजना इन्हीं दोनों से उगलवाई गई जानकारी का नतीजा थी। ये दोनों आदमी पिछले दो बरस से सुल्ताना के अड्डे पर वक्त-वक्त पर रह चुके थे। छापेमारी में सहयोग के एवज में उन्हें आजाद करने का वायदा किया गया था। बाकी दो आदमी मवेशी पालने वाले थे जिनकी पूरी जिंदगी इन्हीं जंगलों में मवेशी चराते बीती थी। ये दोनों सुल्ताना को रोजाना दूध पहुंचाया करते थे। ये चारों आदमी अपनी जिद पर अड़े थे कि वे रास्ता नहीं भूले हैं, लेकिन जब उनसे और ज्यादा पूछताछ की गई तो थोड़ा हिचकते उन्होंने कबूल किया कि जिस दिशा में फोर्स को ले जा रहे हैं उस दिशा में उन्हें यदि पहाड़ियां दिख जाएं तो उन्हें बेहद खुशी होगी।"

रात का यह अंधेरा तिस पर घनी धुंध ऐसे में कोई तीस मील दूर पहाड़ियां दिख पाना नामुमकिन था, लेकिन अब ओखल में सर दिया जा चुका था। जरा सी असावधानी पूरी बिसात को पलट सकती तो फ्रेडी की महीनों की मेहनत मिट्टी हो सकती थी। जाहिर है घुमा फिरा कर ही सही रहनुमाओं ने रास्ता भटक जाने की जिम कॉर्बेट की आशंका पर मुहर लगा दी। सबके दिमाग में एक ही सवाल था, 'अब आगे क्या होगा?'

फ्रेडी का पहला अभियान

फ्रेडी का इरादा सुल्ताना के अड्डे पर अचानक छापा मारकर उसे चौंका देने का था। रास्ता भटक जाने से इस इरादे में खलल पड़ गई। जरूरत इस बात की थी कि सूरज उगने से पहले ही सुल्ताना के अड्डे को अपनी जद में ले लिया जाए। नजदीकी इतनी हो कि पहले इशारे पर ही हमला बोला जा सके। रहनुमाओं ने ताकीद कर रखी थी कि दिन के वक्त सुल्ताना के चौकीदारों की निगाह में आए बगैर अड्डे तक पहुंच पाना मुमकिन नहीं है। दरअसल चौकसी के मद्देनजर सुल्ताना के अड्डे के दक्षिण में घास की चौड़ी सी पट्टी के सिरे पर एक ऊंचे पेड़ पर मचान बंधा हुआ था। मचान पर सुल्ताना के दो चौकीदार चौबीस घंटे मौजूद रहते थे। पौ फटने में महज घंटे भर का समय बाकी था। क्या किया जाए? क्या किया जाए? टोहते-जोहते अचानक जिम कॉर्बेट किसी लैंड मार्क को ढूंढने की कोशिश में लग गए जिससे सुल्ताना के अड्डे के पास पहुंचा जा सके। बैलगाड़ियों के एक रास्ते को चिन्हित किया गया। सब तेजी से एक दिशा में बढ़ चले। इस बीच बरसात थम गई थी और ताजी खुशनुमा हवा के झोंकों से बादल भी साफ हो गए थे। अभी पौ फट ही रही थी कि बैलगाड़ियों के पहियों से बने ढर्रे से उनके कदम लड़खड़ाए। यह एक पुराना ढर्रा था, जो अब काम में नहीं आता था। इसी रास्ते का जिक्र रास्ता बताने वाले चरवाहों ने किया था।

तस्वीर : सुल्ताना का कुआं, गड़प्पू।

लगभग एक मील की दूरी तय करने के बाद शिकार के इस्तेमाल में आने वाली एक पगडंडी पार करते हुए गहरी और धीमी गति से बहने वाली एक छोटी सी नदी मिली। नदी के किनारे-किनारे रेंगते हुए अचानक रास्ता बताने वाले कदम धीमे होते-होते थम गए और वे एकबारगी जमीन पर लेट गए। बाकी सबने उनका अनुपालन किया। सब पर जाहिर हो गया कि वे सुल्ताना के मचान तक पहुंच गए हैं। लेटने के बाद नजर उठने पर सामने मचान दिखाई दिया। एक बहुत बड़े पेड़ पर जमीन से करीब तीस-चालीस फीट की ऊंचाई पर मचान बंधा हुआ था। सबेरे का सूरज इस वक्त जिस ऊंचाई पर था उसकी वजह से मचान पर एकदम सीधे रोशनी पड़ रही थी। मचान पर दो आदमी थे। एक बैठा हुक्का पी रहा था। दूसरा पीठ के बल अधलेटा-सा था और उसके घुटने मुड़े हुए थे।

जिस पेड़ पर मचान बंधा हुआ था उसके एक तरफ घास और पेड़ों का घना जंगल था, दूसरी तरफ लंबा-चौड़ा खुला मैदान। फ्रेडी के गाइडों ने बताया कि सुल्ताना का अड्डा जंगल में अब सिर्फ तीन सौ गज भीतर है। टीम में शामिल सुल्ताना के आदमियों ने ये भी बताया कि मचान पर बैठे दोनों चौकीदार तगड़े निशानची हैं। इसलिए सोच-समझ कर ही उन पर निशाना साधा जाए। घेराबंदी करने वाली पुलिसिया टीम के पास मौजूद असलहों में फ्रेडी के पास उसका सर्विस रिवाल्वर था। एंडरसन निहत्था था। जिम कॉर्बेट राइफल से लैस थे। बाकी सिपाहियों के पास बारह बोर की बंदूकें थीं। अब तक इन बंदूकों की कारगर मार साठ से अस्सी गज तक ही होती है। सीधे तौर पर कॉर्बेट ही वह अकेले आदमी थे, जो मचान पर बैठे सुल्ताना के चौकीदारों से निपट सकते थे, लेकिन इंसानों पर गोली चलाने का उनका कोई तजुर्बा नहीं था। वह एक शिकारी थे। नाराजगी और गुस्से में भी वह किसी इंसान पर गोली चलाने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने दबे पांव जाकर चौकीदारों को दबोच लेने का प्रस्ताव रखा। ऐसा करना उनके लिए आसान था। फ्रेडी की रजामंदी हासिल होने पर कॉर्बेट मचान की तरफ बढ़ चले। पीछे से एंडरसन उनके साथ लग लिए। समझाने बुझाने पर भी जब वह वापस लौटने को तैयार नहीं हुए तो झक मारकर कॉर्बेट को वापस लौटना पड़ा कि शायद फ्रेडी एंडरसन को रोक सकें। दरअसल एंडरसन जंगल में चलते हुए इतनी आवाज पैदा कर रहे थे कि हर हाल में जिम की चौकीदारों को दबोचने की योजना पर पानी फिर जाना था।

इतिहास के झरोखे से

पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

पंचाल के स्वतंत्र राजाओं की मुद्राएं

अहिच्छत्र एवं पंचाल प्रदेश से सर्वाधिक मुद्राएं प्राय: पांचाल के शासकों की ही मिलती हैं। यह मुद्राएं धातु, आकार-प्रकार, मोटाई तथा भार की दृष्टि से अनेक प्रकार की हैं। मुख भाग में लेख के ऊपर सभी मुद्राओं पर लगभग समान चिह्न होते हुए भी पृष्ठ भाग में विभिन्न प्रकार के चिह्न बने मिलते हैं। अग्निमित्र, सूर्यमित्र, भानुमित्र, इन्द्रमित्र, ध्रुवमित्र आदि नामों से युक्त मुद्राओं के पृष्ठ भाग में इन्हीं के प्रतीकात्मक सकेत चिह्न अग्नि, सूर्य, इन्द्र, ध्रुवतारा आदि के चित्र मिलते हैं।

अन्य शासकों की मुद्राएं

अहिच्छत्र से भारतीय यवन शासक ओपोलोडोटस (अपल दत्त) और मिनेंडर (मिलिंद) की एक एक चतुष्कोण ताम्र मुद्रा प्राप्त हुई हैं। यहां से कुणिंद गण के राजा अमोघ भूति की ताम्र मुद्राएं का पतला प्रकार कभी-कभी मिलता रहता है। यहां से मथुरा के शासक गोमित्र, कामदत्त, पुरुषदत्त और रामदत्त, स्वर्ण से युक्त केदार कुषाण मुद्राएं, कश्मीर के शासक विनयादित्य-प्रतापादित्य, गुर्जर प्रतिहार शासक मिहिर भोज आदिव राह की रजत मुद्राएं भी प्राप्त हुई हैं। इनके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिलजी, तुगलक शाह, फीरोज शाह तुगलक तथा मुहम्मद तुगलक आदि की मुद्राएं भी मिली हैं। इससे लगता है कि मुस्लिम काल में अहिच्छत्र आदि स्थानों पर यत्र-तत्र लोगों की बस्ती रही होगी।

मुद्रांक (मोहरे) एवं ताम्रपत्र

प्राचीन इतिहास को जानने के मुद्रांक (मोहरें) भी एक महत्पूर्ण साधन हैं। यह मुद्रांक मूंगा अकीक आदि उपरत्न, मिट्टी, हाथी दांत, स्वर्ण, रजत, तांबा आदि से बने होते हैं। अहिच्छत्र एवं पंचाल के अन्य स्थलों से प्राप्त मुद्रांकों पर ब्राह्मी लिपि में लिखे हुए संस्कृत और प्राकृत भाषा में लेख मिलते हैं। प्राचीन खंडहरों से मिले सभी मुद्रांकों का वर्गीकरण करने से ज्ञात होता है कि सर्वत्र प्राय: एक ही प्रकार की शैली से मुद्रांकों का निर्माण होता था। किसी धातु में उल्टे खुदे लेख को कच्ची गीली मिट्टी पर दबाकर उभार लिया जाता था, उसे सुखाकर आग में पकाते थे। मुद्रांकों के अध्ययन से तत्कालीन राज व्यवहार, धर्म, नीति, मत, संप्रदाय संबंधी अनेक विषयों का ज्ञान होता है। अहिच्छत्र के प्राप्त मुद्रांकों में विभिन्न प्रकार के मुद्रांक हैं जिनमें धार्मिक, राजकीय, शासकीय, व्यक्तिगत, स्थान विशेष आदि के मुद्रांक मिले हैं। अहिच्छत्र भुक्ति की चर्चा करते हुए एक ताम्र पत्र बांस खेड़ा से महाराज हर्षवर्धन के समय का तथा एक अहिच्छत्र भुक्ति के गुणपुर मंडल विषय से संबंधित महाराज भी नाग भट्ट देव का मिला है।

अहिच्छत्र के अवशेषों की खुदाइयां

जैन मंदिर के सामने कई किलोमीटर में फैले हुए 'अहिच्छत्र' के अवशेष (खंडहर) पुरातत्विक दृष्टि से उत्तरी भारत के अपने जैसे स्थलों में प्रथम स्थान रखते हैं। इस कोट अथवा किले के टीलों के अतिरिक्त उसके बाहर चारों तरफ के ग्रामों में भी वभिन्न आकार के टीले फैले हुए हैं जिनकी विशालता के कारण पुरातत्वविद इसकी ओर गंभीरता से आकर्षित हुए। इन खंडहरों का सबसे पहले सर्वे विभाग के हाडग्सन ने सन् 1833 में निरीक्षण किया। कई हिस्सों का उत्खनन एवं खोज (जांच-पड़ताल) कराई। सन् 1862-63 में अलेक्जेंडर कनिंघम ने यहां की खुदाइयां कराईं। सन् 1888 में रामनगर के जमींदार रामपुर निवासी सदर उद्दीन खां ने यहां कुछ कार्य कराया। इसके बाद कुछ हिस्से की खुदाई सन् 1891-92 में फ्यूरर ने कराई।

सन् 1940 से 44 तक एवं सन् 1963-65 की खुदाइयां

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण डायरेक्टर जनरल राव बहादुर के. एन. दीक्षित के निर्देशन में सन् 1940 से 44 तक तथा 1963 से 1965 में एन. आर. बनर्जी ने अहिच्छत्र के अवशेषों का उत्खनन कराया। इसके पश्चात् कोई उत्खनन यहां नहीं हुआ है। सन् 1963-65 की खुदाइयों में विशेष परिणाम नहीं निकला। उस समय दुर्ग के पूर्वी भाग की चार दीवारी के दोनों ओर खुदाई कराकर देखी गई थी। यह चार दीवारी 16 फिट 8 इंच मोटी है। भवनों की दीवारें 50 फिट तक ऊंची मिली हैं। भारतीय पुरातत्व विभाग के द्वारा सन् 1940 से 1944 तक परकोटे के भीतर कई स्थानों पर खुदाई कराई गई। अनुमान था कि यहां प्राक् ऐतिहासिक काल की वस्तुएं प्राप्त होंगी, परंतु ऐसी कोई भी वस्तु नहीं मिल सकी, जो अवशेष इस पिछली खुदाई में मिले हैं वे ईसवी पूर्व 300 से लेकर 1100 ईसवी तक के हैं। इनमें विभिन्न कालों के मकान सड़कें और ईंट के मंदिर हैं। इन मंदिरों की बनावट बौद्ध स्तूपों के ढंग की है। इनके चारों ओर प्रदक्षिणा-मार्ग बना हुआ है। अधिकांश मंदिर कुषाण और गुप्त काल के हैं। एक ऊंचे टीले की खुदाई सबसे निचली तह तक करने पर विभिन्न कालों में निर्मित इमारतों के भग्नावशेष प्रकाश में आए हैं। इन इमारतों को देखने से ज्ञात हुआ कि उनकी निर्माण-शैली में विभिन्नता है। यह भी पता चलता है कि तक्षशिला आदि नगरों के समान नगर-निर्माण व्यवस्था यहां नहीं थी। अहिच्छत्रा की खुदाई से नगर के मध्य में एक विशाल मंदिर पता चला है। यहां पकी हुई ईटों की जो दीवारें मिली हैं, वे 40 से 50 फुट तक ऊंची हैं। इसी समय यहां के एक ऊंचे तथा बड़े ढांचे की खुदाई (एसी तृतीय) की ऊपर से सबसे नीचे की तह तक की गई। विभिन्न तहों से प्राप्त अवशेषों के आधार पर उनका जो काल वर्गीकरण किया गया है वह निम्न प्रकार है :-

नवीं तह-300 ई. पूर्व से पहले/ आठवीं तह-300 से 200 ई.पू./ सातवीं तह- 200-100 ई. पू. / छठी-पांचवीं तह-ई पूर्व. 100 से 100 ई./ चौथी तह-100-350 ई. तीसरी तह-350-750 ई./ दूसरी तह-750-850 ई. / प्रथम तह-850-1100 ई.

इस वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित खुदाई से अहिच्छत्र के प्राचीन इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ा है और विभिन्न कालों के संबंध में महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त हो गई है।

वुट्ज स्टील से निर्मित चाकू।

भारत की विश्व को देन है वुट्ज स्टील यानी सेरिक इस्पात

भारत के द्वारा किए गए खोज या आविष्कार के बारे में पूछते ही उत्साह भरा एक वाक्य सुनने को मिलता है, हमने जीरो खोजा है। इसके आगे पूछने पर बमुश्किल उत्तर मिल पाते हैं। इसके आगे का जवाब वुट्ज स्टील है।

भारत ने दुनिया को गणित और खगोल विज्ञान के अलावा धातुओं की खोज और उनके निर्माण की विधि का आविष्कार किया। मेहरगढ़ में लगभग सात हजार साल पहले के धातु के औजार मिलते हैं। मेहरगढ़ एक और भ्रम का निवारण करता है, यहां से इतने ही वर्ष पूर्व के गेहूं की फसल के अवशेष मिले हैं जिसके बारे में यह कहा जाता है कि गेहूं बाहर से भारत आया। गोधूम के नाम से इसका उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है। खैर हम वापस धातु विज्ञान यानी मेटलर्जी (धातुकर्म) पर आते हैं। आपने बाहुबली फिल्म देखी होगी, उसमें मध्य एशिया से एक तलवार का सौदागर आता है जिसकी तलवार कट्टप्पा बीच से चीर देता है। वास्तव में ये तलवारें जिस धातु से बनती थीं, वे सभी भारत के धातुकर्म विज्ञान के उत्पाद थे, जिन पर दमिश्क, फारस और सेंट्रल मध्य एशियाई देश कारीगरी कर अपना व्यापार करते थे।

डॉ पवन विजय
एसोसिएट प्रोफेसर, जौनपुर

वुट्ज स्टील यानी सेरिक इस्पात भारत की विश्व को देन है। आज से लगभग साढ़े तीन हजार साल पहले यह भारत में बना और मध्य एशिया होते हुए यूरोप पहुंचा। भारत में इसे उत्स कहा गया, जो परिवर्तित होकर वुट्ज के नाम से जाना गया। यह भारत के तमिलनाडु में पहली बार बनाया गया वहां से इसे अन्य क्षेत्रों में भेजा गया। अरब बाद में भारतीय स्टील से बनी तलवारों का केंद्र बना, वहां से यूरोप टेलिंग स्टील के नाम से गया। टेलिंग नाम भारत के तेलिंगा क्षेत्र से पड़ा।

यह इस्पात कार्बन, गंधक, सिलिकॉन और आर्सेनिक के मिश्रण से बनता है। किस तापमान पर कौन सा तत्व मिलने पर यौगिक बनेगा यह जानकारी भारतीयों को थी। ताप और दाब का मानकीकरण भारत की विश्व को देन थी। धातुओं को खान से निकालना और उन्हें परिष्कृत करना आज से सात हजार साल पहले भारत में हो रहा था, खानों का पता लगाना कल्पना के आधार पर तो हुआ नहीं होगा, कोई तकनीक अवश्य रही होगी।

वुट्ज स्टील से बनी तलवार की ब्लेड इतनी तीक्ष्ण होती थी कि बाल को मध्य से चीर दे। इतनी महीन विद्या दुनिया को भारत की देन है। साथ ही एक बात और ध्यान में रखने योग्य है कि जंग रहित लोहा बनाने की विधि भी भारत में खोजी गई, इसमें निकेल का प्रयोग होता है। जंग रहित एक स्तंभ महरौली में है जिस पर बहुत सी बातें महाराजा चंद्र के बारे में लिखी हैं, पर एक महत्वपूर्ण बात जो लिखी है, वह यह कि उन्होंने सिंधु को पारकर यूनानियों के ऑक्सस यानी बल्ख पर विजय प्राप्त किया तो अब शून्य के अलावा वुट्ज स्टील भी याद रखिएगा।

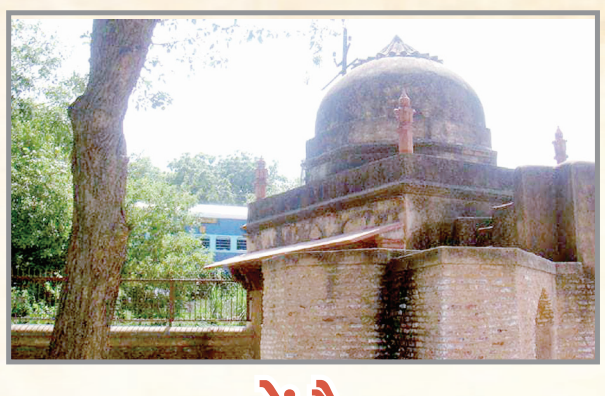

आगरा में है अकबर के घोड़े की समाधि

राजाओं के भी शौक निराले हुआ करते थे। अगर प्रसन्न हुए तो जागीर दे दी, क्रोधित हुए तो सर कलम करा दिया और जब सम्राट अकबर द ग्रेट की बात हो तो कुछ और भी बातें जुड़ जाती हैं, इस महान सम्राट के नाम से। आगरा में आगरा-मथुरा रोड पर गुरु का ताल के सामने सड़क के उस पार फ्लाईओवर आरंभ होने से पहले ही एक लाल पत्थर की घोड़े की मूर्ति ध्यान आकर्षित करती है। इसके निकट ही एक मस्जिदनुमा परिसर भी है जिसको चाहर दीवारी से घेरा गया है। बताते हैं कि यह मूर्ति अकबर के प्रिय घोड़े की है। इस परिसर में ही इतबारी खान की मस्जिद भी है।

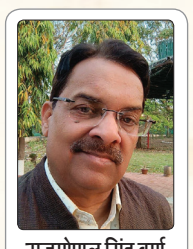

राजगोपाल सिंह वर्मा
वरिष्ठ लेखक, आगरा

यदि घोड़े की बात करें तो इसकी खासियत यह थी कि अकबर ने दिल्ली से 195 किलोमीटर की यात्रा इस घोड़े की पीठ पर ही तय की थी। जिस स्थान पर यह समाधि बनी है, उसके निकट आकर घोड़े ने दम तोड़ दिया था। उसको श्रद्धांजलि स्वरूप अकबर ने उसे यहां दफनाया और उसकी कब्र पर यह बड़ी मूर्ति स्थापित कराई थी। हालांकि यह मूल स्थान नहीं है। मूल स्थान कुछ कदम पीछे है, जहां पर आगरा-दिल्ली रेलवे लाइन स्थापित करने के लिए इसे ब्रिटिश काल में वर्ष 1922 में पुनर्स्थापित करना पड़ा था। एक चित्र में आप इस स्थल के पीछे से गुजरती ट्रेन को स्पष्ट देख सकते हैं।

एक अकेले लाल सैंडस्टोन से तराशी गई इस मूर्ति और मस्जिद का स्थापना वर्ष निश्चित नहीं है, परंतु इतिहासकार इसकी अवधि सन् 1580-1605 के मध्य की बताते हैं। परिसर में स्थित मस्जिद को काफूर की मस्जिद के नाम से जाना जाता है। तीन महराबदार यह छोटी सी मस्जिद मात्र 13 फीट लंबी और दस फीट चौड़ी है। इसके शीर्ष पर एक गुंबद है। पहले इसके पीछे कुछ कमरे बने थे और एक कुआं भी हुआ करता था, परंतु अब न तो कमरे दिखते हैं और न ही कुआं अपनी स्थिति में है। एक अन्य चबूतरे पर एक कब्र-पाषाण बना है। महराबों के ऊपर तीन फलकों पर फारसी में शिलालेख अंकित हैं। इस मस्जिद का निर्माण जहांगीर के कृपापात्र जागीरदार इतबारी खान ने कराया था।

एक महत्वपूर्ण सामंत होने के साथ ही वह जहांगीर के हरम का नाजिर या अधीक्षक भी हुआ करता था। वह जहांगीर का स्वामिभक्त और विश्वासपात्र था। उस समय किले के खजाने की रक्षा का दायित्व भी उसके पास हुआ करता था।

बताते हैं कि इतबारी खान ने ख्वाजा काफूर नामक सूफी संत के लिए मस्जिद और संलग्न कक्ष बनवाए थे। कुछ किंवदंतियां इस परिसर में स्थित घोड़े की मूर्ति को इतबारी खान का लाड़ला घोड़ा बताते हैं, परंतु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण इसे अकबर का ही अधिकृत घोड़ा मानता है और तदनुसार इसे संरक्षित स्मारक का स्तर प्रदान किया गया है।

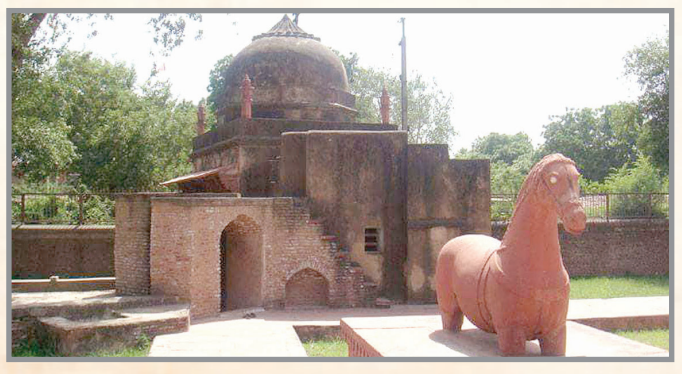

भारत में मुद्रा की यात्रा

1840 के दशक में कैलिफोर्निया और आस्ट्रेलिया में सोने की नई खानें खुल गईं। सोने का उत्पादन बहुत बढ़ गया। इस दशक में दुनियाभर में चांदी के मुकाबले सोने का उत्पादन डेढ़ सौ गुना अधिक हो गया था। परिणाम स्वरूप चांदी के मुकाबले सोना बहुत सस्ता हो गया। जनता भूमि की लगान और अन्य कर चांदी के रुपयों के बजाय सोने की मोहरों से चुकाने लगी। आखिरकार 1 जनवरी, 1853 को मुद्रा के रूप में सोने के चलन को पूरी तरह बंद कर दिया गया।

1860 के प्रारंभिक दौर में विश्व भर में चांदी के उत्पादन में एकाएक उछाल आ गया था। चांदी की भरमार हो गई। पूरा संसार चांदी-चांदी हो गया था। 1893 में सरकार ने अपनी चांदी की टकसाल बंद कर दी। इससे पहले आम लोगों को अपनी चांदी टकसाल में ले जाकर उसके सिक्के ढलवाने का अधिकार प्राप्त था। कालांतर में सरकार ने जनता का यह अधिकार छीन लिया। दिसंबर, 1893 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में यह विषय उठा। कांग्रेस ने सरकार द्वारा सर्व साधारण के लिए चांदी की टकसाल बंद करने के निर्णय की निंदा की, इसे आम जनता के हितों के विरुद्ध करार दिया।

इसके बाद प्रतीक मुद्रा का दौर प्रारंभ हुआ। प्रारंभिक दौर में करेंसी रिजर्व का संपूर्ण सोना भारत में ही रखा जाता था। 1898 में इसे अस्थायी रूप से लंदन में रखे जाने लगा। कुछ समय बाद यह व्यवस्था स्थायी हो गई। भारत का धन भारत के बजाय लंदन के काम आने लगा था। 1900 में रुपयों की ढलाई से प्राप्त मुनाफे से लंदन में स्वर्ण कोष की स्थापना कर दी गई। 1905 में नोटों की पुश्ती के लिए जो करेंसी रिजर्व था, उसमें से कुछ सोना बैंक ऑफ इंग्लैंड में रख दिया गया। 1906 में गोल्ड स्टैंडर्ड रिजर्व की एक शाखा भारत में भी खोली गई, इसमें सोने के बजाय छह करोड़ रुपए रखने की व्यवस्था की गई। ब्रिटेन के शाही टकसाल में सोने के सिक्के और मोहरें ढाली जाती थीं, लेकिन भारत में इसकी अनुमति नहीं थी।

प्रयाग पांडे
वरिष्ठ पत्रकार

1910 में दस और पचास रुपए के नोट अखिल भारतीय कर दिए गए थे। 1911 में एक सौ रुपए का नोट भी अखिल भारतीय हो गया था। 1917 में ढाई रुपए और 1918 में एक रुपए का नोट जारी हुआ। 29 जून, 1917 के बाद चांदी और सोने के सिक्कों के लेन-देन को अपराध घोषित कर दिया गया था। 1931 में भारत में सोने का भाव पौने तीस रुपए प्रति तोला था।

इसके बाद सोने के दाम उत्तरोत्तर बढ़ने लगे। 1929 से 1937 के बीच विश्व में सोने के उत्पादन में वृद्धि हुई। इस अवधि में विश्व में 6740 टन सोने का उत्पादन हुआ। 1931 में अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए भारत ने अपना सोना बेचने का निर्णय लिया। भारत में सोने के खरीददार नहीं थे, इसलिए भारत का सोना विदेश जाने लगा। इससे पहले भारत सोना खरीद रहा था। बीसवीं सदी के प्रारंभ से 1931 तक भारत में तकरीबन सात अरब रुपए मूल्य का सोना बाहर से आया था, लेकिन 1931 से 1940 के बीच भारत को इसमें से करीब चार अरब का सोना बाहर के मुल्कों को बेचना पड़ा था। इन नौ सालों में भारत से जितना सोना बाहर गया, उतना तैमूरलंग और नादिरशाह भी यहां से लूट कर नहीं ले गए थे।